

सुबह

subhavernews@gmail.com
facebook.com/subhavernews
www.subhavernews.com
twitter.com/subhavernews

सुप्रभात

झूठ से, सच से, जिससे भी यारी रखें
आप तो अपनी तक़रीर जारी रखें

बात मन की कहें या वतन की कहें
झूठ बोलें तो आवाज़ भारी रखें

इन दिनों आप मालिक हैं बाज़ार के
जो भी चाहें वो क़ीमत हमारी रखें

आपके पास चोरों की फ़ेहरिस्त है
सब पे दस्त-ए-करम बारी बारी रखें

सैर के वास्ते और भी मुल्क हैं
रोज़ तैयार अपनी सवारी रखें

वो मुक़म्मल भी हो ये ज़रूरी नहीं
योजनाएं मगर ढेर सारी रखें

- राहत इंदौरी

सुबह का आलम



फोटो-त्रतुराज बुड़ावनवाला

पत्थरदिल सरकार की बंगाल से विदाई जरूरी

● पीएम बोले-बंगाल में घुसपैटियों को वोटर बना रही टीएमसी

टीएमसी सरकार को चेतावनी, भाजपा इन्हें देश से निकालेगी



कोलकाता/गुवाहाटी (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मालदा में शनिवार को पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल के सामने एक बड़ी चुनौती घुसपैट की है। बंगाल के कई इलाकों में आबादी का संतुलन बिगड़ रहा है। टीएमसी घुसपैटियों को वोटर बना रही। गरीबों का हक छीना जा रहा है। भाजपा सरकार बनते ही घुसपैटियों पर एक्शन लिया जाएगा। आयुष्मान भारत योजना पर बात करते हुए पीएम ने कहा कि टीएमसी वालों को आपकी तकलीफ की कोई चिंता नहीं है। यहाँ आयुष्मान योजना लागू नहीं होने दी गई है। ऐसी पत्थर दिल सरकार की बंगाल से विदाई जरूरी है। पीएम ने मालदा में भारत की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का उद्घाटन किया। यह ट्रेन हवड़ा से गुवाहाटी के बीच चलेगी। उन्होंने ट्रेन के ड्राइवर से मुलाकात और उसके बारे में जाना। पीएम ने ट्रेन में मौजूद बच्चों से भी बात की।

बंगाल के सामने एक बड़ी चुनौती घुसपैट की है

आप देखिए दुनिया के जो विकसित देश हैं, समृद्ध देश हैं, जिन्हें पैसों की कमी नहीं, वे भी घुसपैटियों को निकाल रहे हैं। प. बंगाल में भी घुसपैटियों को बाहर करना जरूरी है। एक एक घुसपैट को निकालना जरूरी है। टीएमसी के रहते ये संभव नहीं है। ये जमीन-हक, बहन-बेटियों की रक्षा नहीं करेंगे। इन्हें सत्ता से बाहर निकालना चाहिए। मैं मालदा की बाढ़ राहत की कैग रिपोर्ट देख रहा था। टीएमसी के चहेतों के खातों में 40-40 बार बाढ़ राहत का पैसा भेजा गया। जो इसके हकदार नहीं थे, उन्हें लाखों रुपए दिया गया। जिन पर संकट आया उन्हें कुछ नहीं मिला।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री परिसर का निरीक्षण गैस पीड़ितों के साथ हर कदम पर खड़ी है सरकार: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 2 और 3 दिसम्बर 1984 की दरमियानी रात भोपाल में मिथाइल आइसोसायनाइड (एमआईसी) गैस का रिसाव एक भीषण दुर्घटना थी। घटना में बड़ी संख्या में लोग हताहत हुए। करीब 40 साल तक रासायनिक कचरा यहाँ पड़ा रहा। हमारी सरकार ने मानवीय उच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में बिना किसी पर्यावरण नुकसान और मानव हानि के यहाँ के रासायनिक कचरे का सफलतापूर्वक निष्पादन करवाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अब हम समाज के सभी वर्गों एवं प्रभावित पक्षों को विश्वास में लेकर यूनियन कार्बाइड परिसर का विकास करेंगे और मानवीय उच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में अब स्वच्छ हो चुके इस परिसर में भोपाल गैस त्रासदी में दिवंगत व्यक्तियों की स्मृति में एक स्मारक बनाएँगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार सभी गैस पीड़ितों के साथ हर कदम पर खड़ी है। प्रभावितों के कल्याण में हम कोई कमी नहीं रखेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को भोपाल के आरिफ नगर स्थित यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री परिसर का गहनता से निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास विभाग के अधिकारियों से इस परिसर में स्मारक निर्माण के संबंध में जानकारी ली। इस दौरान सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय श्री आलोक कुमार सिंह, आयुक्त जनसम्पर्क श्री दीपक कुमार सक्सेना, संचालक गैस राहत श्री स्वतंत्र कुमार सिंह, निगमायुक्त श्रीमती संस्कृति जैन और गैस त्रासदी राहत विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।



फैक्ट्री परिसर के समुचित विकास के लिए करेंगे सभी जरूरी प्रबंध

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड फैक्ट्री परिसर में पड़े रासायनिक कचरे का मानवीय उच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में समुचित निष्पादन किया जा चुका है। अब हम भोपाल मेट्रोपॉलिटन एरिया के निर्माण के साथ इस परिसर के भी समुचित विकास के लिए सभी जरूरी प्रबंध कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मध्य प्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं, जो यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री परिसर में बिना किसी सेपटी मार्क के गए और फैक्ट्री के कोर एरिया का बारीकी से मुआयना किया। निरीक्षण के बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया से चर्चा में कहा कि भोपाल स्थित यूनियन कार्बाइड कारखाने से जहरीली गैस का रिसाव मध्य प्रदेश की ही नहीं, देश की सबसे भीषण गैस त्रासदी थी। वर्ष 1984 में 2 और 3 दिसंबर की रात इस फैक्ट्री से गैस के दुष्प्रभाव के कारण भोपाल ने मौत का जो मंज़ूर देखा, वह हमारी स्मृतियों से कभी हट्टा नहीं। गैस त्रासदी के बाद तत्कालीन सरकार ने इस क्षेत्र को लावारिस छोड़कर बड़ी लापरवाही की। उन्होंने फैक्ट्री में फैले जहरीले कचरे को हटाने के लिए कोई निगम नहीं लिया और इस भीषण त्रासदी के बाद फैक्ट्री को बंद कर दिया गया। तत्कालीन सरकार के जिम्मेदारों ने फैक्ट्री के मालिक वरिन एंडरसन को यहाँ से भाग जाने में मदद की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केंद्र में यूपीए सरकार रहते हुए भी इस गैस प्रभावित क्षेत्र के विकास के लिए कुछ नहीं किया गया।

29 नगर निगमों में 17 पर अकेले बीजेपी का कब्जा

● महाराष्ट्र नगर निगम चुनाव में बीजेपी ने दर्ज की एकतरफा जीत ● राउत बोले-शिंदे जयचंद नहीं बनते तो मुंबई कमी नहीं जीतती बीजेपी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र नगर निगम चुनाव में बीजेपी ने एकतरफा जीत दर्ज की। कुल 29 नगर निगमों में से 17 पर अकेले भाजपा का कब्जा हो गया है। यानी इन निगमों में मेयर बनाने जा रही है। वहीं, उसके नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन ने 8 निगमों में जीत हासिल की। इस तरह भाजपा गठबंधन को 25 नगर निगमों में जीत दर्ज हुई है। भाजपा-शिवसेना (शिंदे) के गठबंधन ने उद्धव ठाकरे से बीएमसी छीनकर, उनका तीन दशक पुराना दबदबा खत्म कर दिया है। बीएमसी में भाजपा 89 जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनी है। राज्य चुनाव आयोग की तरफ से घोषित फाइनल रिजल्ट के मुताबिक बीजेपी+ ने 29 नगर निगमों में 2,869 सीटों में से 1,425 सीटें जीती हैं।

यूपी में कोहरा बना काल, 40 गाड़ियां टकराई, 7 की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में शनिवार को सर्दी के इस सीजन का सबसे घना कोहरा छाया। 15 जिलों में 40 से ज्यादा वाहन कोहरे के कारण टकरा गए। इन घटनाओं में डेढ़

श्रीनगर में पारा-4 डिग्री पहुंचा, हिमाचल में ट्रिस्ट फंसे

साल की बच्ची समेत 7 लोगों की मौत हो गई, जबकि 50 से ज्यादा घायल हुए। राज्य में 100 से ज्यादा ट्रेन देरी से चल रही हैं। जम्मू-कश्मीर में भयंकर सर्दी का 40 दिन का चिल्लाई कलां जारी है। आज इसका 28वां दिन है। कश्मीर में मिनिमम टेम्परेचर में भारी गिरावट आई। श्रीनगर में टेम्परेचर -4.0 रहा, शोपियां -



5.6 डिग्री रहा। इनके अलावा पहलगाम -2.6, गुलमर्ग -4.2, सोनमर्ग -2.9 डिग्री रहा। हिमाचल के लाहौल स्पीति और चंबा में बर्फबारी हुई। स्पीति के

बढ़ोतरी हुई। सियोबाग का पारा 1.0 से सीधे 8.0 डिग्री पहुंचा। उत्तराखंड के 4 जिलों में नदी-नाले और झरने जम चुके हैं, जिसमें पिथौरागढ़, चमोली, उत्तरकाशी और रुद्रप्रयाग के ऊंचाई वाले इलाके शामिल हैं। इन इलाकों में पानी की पाइपलाइन भी जम चुकी है। मौसम विभाग के मुताबिक 17 जनवरी को उत्तरकाशी, चमोली और पिथौरागढ़ जिले के ऊंचाई वाले इलाकों में हल्की बारिश के साथ बर्फबारी होने की संभावना है। बिहार में अभी सर्दी से राहत नहीं मिली है। मौसम विभाग ने आने वाले दिनों में फिर से तेज सर्दी पड़ने के संकेत दिए हैं। पश्चिमी विक्षोभ ऐक्टिव होने से 22 जनवरी के बाद तापमान में तेजी से गिरावट आ सकती है।

रेवाड़ी के किसान यशपाल 3 दिन रहेंगे राष्ट्रपति के मेहमान

● गणतंत्र दिवस पर होंगे सम्मानित, कैसर से पिता को खोया, फिर अपनाई प्राकृतिक खेती

रेवाड़ी (एजेंसी)। रेवाड़ी जिले के गांव कंवाली के किसान यशपाल खोला तीन दिन तक राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के मेहमान बनेंगे। देश के 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर सम्मानित किए जाने वाले छह किसानों में यशपाल खोला का नाम भी शामिल है। इसके लिए राष्ट्रपति भवन की ओर से उन्हें आधिकारिक निमंत्रण मिला है। यशपाल खोला 25 जनवरी को अपनी पत्नी अनीता कुमारी के साथ दिल्ली रवाना होंगे और 28 जनवरी को वापस लौटेंगे। यशपाल ने साल 2018 में पिता की कैसर से हुई मौत के बाद पूरी तरह प्राकृतिक खेती को अपना लिया था। हालांकि, उन्होंने प्राकृतिक खेती की शुरुआत साल 2014 में ही कर दी थी। जानकारी के अनुसार, इन किसानों को कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आईसीएआर दिल्ली तक खुद जाना होगा। इससे आगे राष्ट्रपति भवन तक पहुंचाने और वहां रहने की पूरी व्यवस्था सरकार करेगी।



अंतिम यात्रा के लिए आरिश्तेदार, जन्मदिन मनाकर लौटे

नागपुर में शव यात्रा से पहले 103 साल की दादी जिंदा हुई

नागपुर (एजेसी)। महाराष्ट्र के नागपुर में एक चौकाने वाली घटना हुई। 103 साल की महिला को मृत समझकर परिजनों ने अंतिम संस्कार की तैयारी कर ली, लेकिन शव यात्रा से पहले उनकी सांस चलने लगी। परिजनों ने 12 जनवरी की शाम महिला को मृत मान लिया गया था। 13 जनवरी की सुबह अंतिम यात्रा तय थी, लेकिन करीब दो घंटे बाद परिजनों को उनके शरीर में हलचल दिखाई। यह मामला नागपुर जिले के रामटेक शहर के



आंबेडकर वार्ड का है। यहां रहने वाली 103 साल की गंगाबाई सावजी साखरे पिछले करीब दो महीनों से बिस्तर पर थीं। घर वालों ने मृत समझकर परंपरा के अनुसार गंगाबाई को नरक कपड़े पहनाए। उनके हाथ-पैरों के अंगूठे बांधे गए और नाक में रुई रखी गई। रिश्तेदारों और परिचितों को उनके निधन की सूचना दी गई। परिजनों ने सोशल मीडिया पर भी उनके निधन की खबर साझा कर दी। घर के सामने मंडप लगाया गया, कुर्सियां मंगवाई गईं और शव वाहन बुक किया गया। 13 जनवरी सुबह 10 बजे अंतिम यात्रा का समय तय किया गया।

ईरान से लौटे भारतीय दिल्ली एयरपोर्ट पर फूट-फूटकर रोए

कहा-वहां इंटरनेट नहीं, हालात बदतर, हिंसा में 3 हजार मौतें

नई दिल्ली (एजेसी)। ईरान में हिंसा के बीच वहां फंसे कई भारतीय नागरिक शुक्रवार देर रात दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचे। इनमें ज्यादातर स्टूडेंट्स हैं। इनमें कुछ भारत सरकार के पहले से भारत लौटे, तो कुछ निजी फ्लाइट्स से अपने खर्च पर वापस आए। दिल्ली एयरपोर्ट पर अपने परिवार से गले लगकर कई भारतीय नागरिक फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने बताया कि हिंसा के दौरान वे किस परिस्थितियों में ईरान में फंसे थे। ईरान से लौटे



जम्मू-कश्मीर के एक युवक ने कहा- वहां हालात बहुत खराब हैं। खतरनाक विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। ईरान से लौटते मीडिकल स्टूडेंट अर्शद दहरा ने बताया कि भारतीय दूतावास ने उनसे संपर्क किया था, लेकिन वह एक निजी फ्लाइट से खुद दिल्ली आई है। एक अन्य युवक ने कहा- हम वहां एक महीने तक फंसे रहे। एक-दो हफ्तों से ज्यादा परेशानी होने लगी। घर से बाहर निकलते, तो प्रदर्शनकारी गाड़ी के सामने आ जाते थे। ईरान में वहां की करंसी 'रियाल' के ऐतिहासिक रूप से नीचे गिरने और महंगाई के विरोध में 28 दिसंबर 2025 में प्रदर्शन शुरू हुए थे। देश के सभी 31 प्रांतों में हिंसा फैल गई है। इसमें 3 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई है।

कांग्रेस विधायक का बयान समाज को बांटने वाला व लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है: सीएम यादव

बरेया के बयान पर सोनिया व प्रियंका की चुप्पी कांग्रेस की कथनी और करनी में फर्क उजागर करती है: हेमंत खण्डेलवाल

भोपाल। कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरेया के महिलाओं को लेकर दिए दूषित बयान पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं पार्टी की वरिष्ठ नेत्रियों ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कड़ी आलोचना की है। इंदौर, भोपाल एवं जबलपुर सहित पूरे प्रदेश में भाजपा महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी एवं कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरेया के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर बरेया से सार्वजनिक माफी एवं कांग्रेस से निष्कासन की मांग की।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरेया ने समाज में जहर घोलने वाला बयान दिया है। विधायक बरेया का यह बयान कांग्रेस पार्टी की महिला और दलित विरोधी सोच को उजागर करता है। बरेया ने अपने बयान से सामाजिक विद्वेष फैलाने का काम किया है, जो किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं है। राहुल गांधी ने इंदौर में विधायक फूल सिंह बरेया के साथ मंच साझा किया। राहुल गांधी का यह कदम क्या बरेया के बयानों को



मौन सहमति व स्वीकारोक्ति मानी जाए? राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी विधायक बरेया पर कार्रवाई करते हुए पार्टी से बाहर निकालें। बरेया के खिलाफ राहुल गांधी कोई कार्रवाई नहीं करते तो यह माना जाएगा कि अन्य समाजों को लेकर उनके मन में कोई सम्मान नहीं है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि महिलाओं को लेकर शर्मनाक बयान देने वाले कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरेया के साथ राहुल

गांधी ने मंच साझा कर कांग्रेस की महिला विरोधी मानसिकता प्रदर्शित की है। बरेया का बयान कांग्रेस की विचारधारा और मातृशक्ति के प्रति निम्न स्तरीय संस्कार का प्रतिबिंब है। सोनिया व प्रियंका की चुप्पी कांग्रेस की कथनी और करनी उजागर करती है।

कांग्रेस पार्टी स्पष्ट करे कि वह बरेया के बयान से सहमत है या नहीं- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरेया

अरुणाचल में जमी हुई झील में फिसलकर दो युवक डूबे

शव मिले, दोनों केरल के थे, लेक के ऊपर बर्फ की परत टूटने से हादसा

ईटानगर (एजेसी)। अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में स्थित सेला लेक में शुक्रवार को केरल के दो युवक डूब गए। एक पर्यटक का शव शुक्रवार को ही बरामद कर लिया गया, जबकि दूसरे का शव शनिवार को बरामद हुआ। पानी के भीतर कम विजिबिलिटी के कारण गोताखोरों को शव ढूंढने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। पुलिस अधीक्षक डी. डब्ल्यू. थोंगोन ने बताया कि मृतकों की पहचान दिनु (26) और महादेव (24) के रूप में हुई है। दोनों सात लोगों के टूरिस्ट ग्रुप का हिस्सा थे, जो असम गुवाहाटी के रास्ते अरुणाचल के तवांग में घूमने पहुंचे थे। घटना

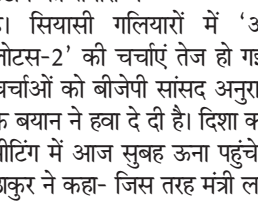


कल दोपहर में हुई, जब युवकों का ग्रुप जमी हुई झील के ऊपर मौज-मस्ती कर रहा था। इसी दौरान बर्फ की परत टूट गई और एक युवक पानी में गिर गया। उसे बचाने के लिए दिनु और महादेव झील में उतरे। जो युवक पहले गिर था, वह सुरक्षित बाहर आ गया, लेकिन दिनु और महादेव बर्फले पानी में बह गए। स्क्वैडों ने बताया कि प्रशासन को करीब 3 बजे सूचना मिली, जिसके बाद जिला पुलिस, आर्मी, राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल और एनडीआरएफ की संयुक्त टीम ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया।

हिमाचल कांग्रेस में राज्यसभा चुनाव से पहले जमकर घमासान

नेताओं में असंतोष, 'ऑपरेशन लोटस-2' की चर्चाएं तेज बीजेपी सांसद अनुराग बोले-कुछ बड़ा होने का है संकेत

शिमला (एजेसी)। हिमाचल की सत्तारूढ़ कांग्रेस में राज्यसभा चुनाव से पहले फरवरी 2024 जैसा असंतोष नजर आ रहा है। मंत्री विक्रमादित्य सिंह के बयान के बाद सुखू केबिनेट दो-फाड़ दिख रही है। मंत्री बारी-बारी एक दूसरे पर तीखे जुबानी हमले बोल रहे हैं। बीजेपी इस फूट का फायदा उठाने की तैयारी में है। सियासी गलियारों में 'ऑपरेशन लोटस-2' की चर्चाएं तेज हो गई हैं। इन चर्चाओं को बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर के बयान ने हवा दे दी है। दिशा कमेटी की मीटिंग में आज सुबह उन पहुंचे अनुराग ठाकुर ने कहा- जिस तरह मंत्री लड़ रहे हैं,



वह बड़ा होने का इशारा है। उन्होंने कहा- कांग्रेस का कुनबा कभी भी इस तरह नहीं बिखरा, जैसा अभी लग रहा है। बता दें कि राज्यसभा सांसद इंदू गोस्वामी का 6 साल का कार्यकाल 10 अप्रैल को पूरा हो रहा है। लिहाजा इससे पहले राज्यसभा चुनाव प्रस्तावित है। मगर कांग्रेस सरकार में 2024 जैसी टुटबाजी खुलकर सामने आ गई है। वजह, विक्रमादित्य सिंह का यूपी-बिहार के अफसरों के शासक बनने को लेकर दिया गया बयान बना है। इस बयान के बाद राजस्व मंत्री, पंचायतीराज मंत्री और तकनीकी शिक्षा राजेश धर्माणी ने भी मंत्री विक्रमादित्य पर जुबानी हमले बोले।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रयासों से विदिशा क्षेत्र को सड़क विकास की मेगा सौगात

केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी ने माना शिवराज का विजय

विदिशा/भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के विशेष प्रयासों से विदिशा संसदीय क्षेत्र और आसपास के जिलों को आज सड़क विकास की ऐतिहासिक सौगात मिली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने विदिशा में लगभग 4,400 करोड़ रुपए की 8 राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया, साथ ही लगभग 450 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की गरिमायुक्त उपस्थिति रही।

विदिशा के लिए 4,400 करोड़ की सड़क परियोजनाएं- कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी, श्री शिवराज सिंह और मुख्यमंत्री की उपस्थिति में रायसेन-विदिशा राष्ट्रीय राजमार्ग, विदिशा-न्यारसपुर, न्यारसपुर-राहतगढ़ और राहतगढ़ से सागर तक राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण एवं चौड़ाईकरण कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण किया गया। इटारसी-बुधनी-बरखेड़ा-ओबेदुल्लागंज मार्ग, जो रातानापी अभयारण्य के बीच से गुजरने वाला शानदार राष्ट्रीय राजमार्ग है, उसका भी लोकार्पण किया गया, जिससे पूरे क्षेत्र की कनेक्टिविटी को नई गति मिलेगी।

शिवराज सिंह चौहान की पहल पर स्वीकृत नई बड़ी घोषणाएं- नितिन गडकरी ने मंच से घोषणा की कि विदिशा-सागर-कोटा ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे लगभग

16,000 करोड़ रुपए की लागत से मंजूर हो चुका है, जिससे करीब 75 किलोमीटर दूरी कम होगी और यह दिल्ली-मुंबई तथा भोपाल-इंदौर पर जैसे बड़े एक्सप्रेस-वे से जुड़कर नए आर्थिक गलियारों का काम करेगा। शिवराज सिंह चौहान की मांग पर नसरुल्लागंज-रेहटी-बुधनी रोड और गोपालपुर-भरुंदा रोड को चार लेन और सीमेंट कंक्रीट से विकसित करने को मंजूरी दी गई, जिससे विदिशा संसदीय क्षेत्र और नर्मदापुरम-सीहोर बेल्ट में आवागमन और व्यापार को बड़ा लाभ होगा। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि इस पश्चि से गांव-गांव तक मजबूत सड़क नेटवर्क बनाया जाएगा, जिससे किसानों की उपज, उद्योग और पर्यटन सभी को सीधा लाभ पहुंचेगा।

विकास की भूख कभी खत्म नहीं होती, शिवराज ने गडकरी के प्रति जताया आभार- श्री चौहान ने कहा, आज आपने 4,400 करोड़ रुपए की सौगातें दी हैं, इसके लिए हृदय से अभिनंदन, लेकिन विकास की भूख कभी पूरी नहीं होती, और विदिशा-रायसेन-सीहोर-खातेगांव-इखरार सहित पूरे संसदीय क्षेत्र के लिए आगे भी नई परियोजनाएँ स्वीकृत करने का अनुरोध किया। उन्होंने नितिन गडकरी को असंभव को संभव करने वाले, विकास और सड़क क्रांति के जनक बताते हुए कहा कि विदिशा, रायसेन, सीहोर और खातेगांव की जनता उनकी इस उदार सौगात के लिए हृदय से आभारी है।

विनोद नागर नासिक में साहित्य विभूति सम्मान से सम्मानित

भोपाल। राजधानी के वरिष्ठ लेखक, पत्रकार, समीक्षक और स्तंभकार विनोद नागर को हाल ही में महाराष्ट्र के नासिक शहर में 'विद्योत्तमा साहित्य विभूति' सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें विद्योत्तमा फाउंडेशन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मान समारोह में प्रदान किया गया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार एवं दैनिक 'भास्कर' समाचार पत्र के समूह संपादक राजेश दुबे ने की। केंद्रीय संस्कृत



विश्व विद्यालय, नासिक के निदेशक डॉ. नीलाभ तिवारी समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि साहित्य (कॉपीराइट प्रोटेक्शन रिसर्च/बिलिटी) के बाद अब देश में पर्सनल सोशल रिसर्च/बिलिटी (पीएसआर) की नई अवधारणा पर गंभीरता पूर्वक विचार करने का समय आ गया है। समारोह में विद्योत्तमा फाउंडेशन के अध्यक्ष सुबोध कुमार मिश्र ने बताया कि इस वर्ष देश के विभिन्न भागों से आये 31 साहित्यकारों को उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिये सम्मानित किया गया है। मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के नरेश मेहता सम्मान से विभूति नागर को 'साहित्य विभूति' सम्मान उनकी पुस्तक 'लिखा तो क्या' के लिये दिया गया है।

कोई देश टैरिफ लगाता रहे, भारत आत्मनिर्भरता के रास्ते पर चलेगा

संघ चीफ मोहन भागवत बोले-किसी के दबाव में नहीं होगा इंटरनेशनल ट्रेड

कहा-कुछ देश ग्लोबलाइजेशन को सिर्फ ग्लोबल मार्केट की तरह ही देखते हैं

छत्रपति संभाजीनगर (एजेसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने लोगों से आत्मनिर्भरता और भागवत ने कहा कि कुछ देश

स्वदेशी (लोकल) सामान के इस्तेमाल करने की अपील करते हुए कहा कि जहां तक हो सके, देश में बना हुआ सामान ही खरीदे। अगर कोई चीज भारत में नहीं बन सकती, तभी उसे बाहर से मंगाना चाहिए। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में एक हिंदू सम्मेलन में उन्होंने कहा कि भारत इंटरनेशनल ट्रेड कर रहा है, लेकिन किसी देश के दबाव में नहीं हैं। उन्होंने कहा कि चाहे कोई देश टैरिफ लगाए या दबाव बनाए,

भारत ने आत्मनिर्भर बनने का रास्ता चुन लिया है और उसी पर चलना चाहिए। भागवत ने कहा कि कुछ देश ग्लोबलाइजेशन को सिर्फ ग्लोबल मार्केट की तरह देखते हैं, लेकिन भारत इसे एक ग्लोबल फैमिली के नजरिए से देखता है। हमें दूसरे देशों में रोजगार पैदा करने की चिंता नहीं करनी चाहिए, यह उनकी जिम्मेदारी है। भागवत ने कहा कि भारत के साथ अगर कुछ अच्छा या बुरा होता है, तो इसके लिए हिंदुओं से सवाल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है, बल्कि एक विचार का नाम है।



हिंदुओं से सवाल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है, बल्कि एक विचार का नाम है।

आरएसएस चीफ बोले-

हमलों के बावजूद परंपरा जीवित- भागवत ने कहा कि सदियों से हमलों, कटिनाइयों और तबाही के बावजूद भारत की परंपरा और मूल मूल्य जीवित रहे हैं, जिन्होंने अपने अंदर अच्छे संस्कार, धर्म और मूल्य बचाकर रखे, वही हिंदू कहलाए, और ऐसे लोगों की भूमि को भारत कहा गया। संघ प्रमुख ने कहा कि अगर भारत के लोग अच्छे, ईमानदार और मजबूत चरित्र वाले बनते हैं, तो वही गुण दुनिया के सामने देश की पहचान बनेंगे। आज पूरी दुनिया भारत से उम्मीद करती है और भारत तभी सही मायने में योगदान दे पाएगा, जब वह ताकतवर और प्रभावशाली होगा। ताकत का मतलब सिर्फ हथियार नहीं होता, बल्कि समझ, नैतिकता, ज्ञान और सही सिद्धांत भी ताकत का हिस्सा हैं। हिंदू समाज में एकता सिर्फ संघ का लक्ष्य नहीं है, बल्कि पूरे हिंदू समुदाय की जिम्मेदारी है।

गणतंत्र दिवस की थीम वंदेमातरम, निकलेंगी 30 झांकियां

भारतीय सेना की नई नैवर बटालियन भी होगी परेड में शामिल इस बार राफेल और सुखोई के साथ तेजस नहीं बन पाएगा हिस्सा

नई दिल्ली (एजेसी)। 26 जनवरी को भारत 77वां गणतंत्र दिवस मनाए जा रहा है। इस बार मुख्य परेड की थीम वंदेमातरम पर रखी गई है। परेड के दौरान कर्तव्य पथ पर 30 झांकियां निकलेंगी, जो स्वतंत्रता का मंत्र-वंदे मातरम, समृद्धि का मंत्र-आत्मनिर्भर भारत थीम पर आधारित होंगी। कर्तव्य पथ पर एनक्लोजर के बैकग्राउंड में वंदेमातरम की लाइव वाली पुरानी पेंटिंग बनाई जाएगी। मेन स्टेज पर



फूलों से वंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी को श्रद्धांजलि दी जाएगी। इस



बार गणतंत्र दिवस परेड के मुख्य अतिथि यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एटोनियो कोस्ता

और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लैयेन होंगे। परेड में पहली बार बैक्ट्रियन ऊंट, नई बटालियन भैरव भी मार्च पास्ट करेंगी। हालांकि इस बार के फ्लाइंगस्ट में राफेल, एम-30, अपाचे जैसे 29 विमान शामिल होंगे। हालांकि इस बार तेजस को नहीं रखा गया है। डिफेंस सेक्रेटरी आर के सिंह से तेजस के परेड में न होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि सेना के कुछ बेहतरीन प्लेटफॉर्म दिखाए जा रहे

हैं। कुछ शामिल किए गए हैं जबकि कुछ नहीं, लेकिन कोई खास वजह नहीं है। निमंत्रण पत्रों पर वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ का लोको होगा। परेड खत्म होने पर वंदे मातरम की थीम वाले बैनर के साथ गुब्बारों को हवा में छोड़ा जाएगा। पारंपरिक प्रथा से हटकर, परेड स्थल पर एनक्लोजर के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले और अन्य लेबल का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा।

रिमाउंट एंड वेटेनरी विंग के जानवर परेड में शामिल होंगे

पहली बार सेना की रिमाउंट एंड वेटेनरी विंग के जानवर परेड में शामिल होंगे। इनमें 2 बैक्ट्रियन ऊंट, 4 जासकर टट्टू, 4 शिकारी पक्षी और 10 मिलिट्री डॉग शामिल हैं। पहली बार भैरव लाइट कमांडो बटालियन भी गणतंत्र दिवस परेड में हिस्सा लेगी। अक्टूबर 2025 में भैरव बटालियन को इन्फैंट्री और स्पेशल फोर्स के बीच अंतर को पाटने के लिए बनाया गया था। 29 जनवरी को वीटिंग ट्रिटी सेरेमनी के लिए भी एनक्लोजर का नाम भारतीय वाद्ययंत्रों- बांसुरी, डमरू, एकतारा, एसरज, मुदंगम, नगाड़ा, पखावज, सतूर, सारंगी, सरिदा, सरोद, शहनाई, सितार, सुरबहार, तबला और वीणा के नाम पर रखा जाएगा। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 17 और मंत्रालयों से 13 समेत कुल 30 झांकियां शामिल होंगी।

भागीरथपुरा में राहुल गांधी ने कहा 'पानी पीकर लोग मर रहे, यही अर्बन मॉडल!'

इंदौर। शनिवार को दूषित पानी प्रभावित भागीरथपुरा में कांग्रेस के नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पहुंचे। उन्होंने दूषित पानी पीने से मुलाकात की। एयरपोर्ट से राहुल गांधी पहले बॉम्बे हॉस्पिटल गए, जहां उन्होंने दूषित पानी से पीड़ित मरीजों और परिजन से मुलाकात की, फिर भागीरथपुरा पहुंचे। भागीरथपुरा में मृतकों के परिजन से मिलने के बाद उन्होंने कहा कि ये नए मॉडल की स्मार्ट सिटी है। पीने का पानी नहीं है। कई लोग पानी पीने के बाद बीमार हुए, यानी इंदौर में साफ पानी नहीं मिलता है। क्या यही है अर्बन मॉडल। राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रही है। किसी को ये राजनीति लगे तो लगे, लेकिन लोगों को साफ पानी मिलना चाहिए।

राहुल के प्रशासन और सरकार की कार्यप्रणाली पर सीधा हमला किया। राहुल गांधी भागीरथपुरा पहुंचे और दूषित पानी से जान गंवाने वाली गीता बाई और जीवन लाल के परिवार से मिले। दोनों परिवारों को उन्होंने आर्थिक मदद के चेक दिए। इसके बाद राहुल गांधी संस्कार गार्डन पहुंचे, जहां उन्होंने अन्य प्रभावितों के परिजनों से मुलाकात की। राहुल गांधी ने सभी को एक-एक लाख और सिंघार ने 50-50 हजार रुपए के चेक दिए। राहुल के साथ पूर्व मुख्यमंत्री दिव्यजय सिंह, प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और अजय सिंह भी रहे।

लोग पानी पीकर मर रहे

राहुल गांधी ने कहा कि कई परिवारों में लोगों की डेथ हुई, लोग बीमार हुए हैं। ये कहा जाता था कि देश को स्मार्ट सिटी दी जाएगी, ये नए मॉडल की स्मार्ट सिटी

मृतकों के परिजनों को डेढ़-डेढ़ लाख के चेक, सरकार पर सवाल उठाए



सरकार जिम्मेदारी ले

कांग्रेस नेता ने कहा कि ये सिर्फ इंदौर में नहीं है। अन्य शहरों में भी यही हो रहा है। सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रही। सरकार में कोई तो जिम्मेदार होगा, जिसने यहां ये काम करवाया है, इसलिए जिम्मेदारी सरकार को ही लेनी चाहिए। लोगों ने जो इलाज कराया है, मोते हुई है उसके लिए सरकार को मुआवजा तो देना चाहिए।

पानी नहीं मिल रहा

राहुल गांधी ने कहा कि उनको रहवासियों ने बताया कि इलाके में जो टंकी है ये घटना का सिंबल है। आज भी लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा। अभी बिन लगा दिया, लेकिन कुछ दिन में हटा दिया जाएगा और फिर वही पानी दिया जाएगा। लोग कह रहे हैं जो सरकार की जिम्मेदारी है उसे पूरा करे। भाजपा के इस सवाल पर कि आप यहां राजनीति करने आए हैं! जवाब में राहुल ने कहा कि मैं उनको सपोर्ट करने यहां आया हूँ। मैं विपक्ष का नेता हूँ। यहां उनका मुद्दा उठाने उनकी मदद करने आया हूँ। इसमें कोई गलत काम नहीं है। मेरी जिम्मेदारी बनती है कि हमारी देश में लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा है तो मदद करूँ। मैं इनके साथ खड़ा हूँ। आप इनको साफ पानी दिलवाइए।

है। पीने का पानी नहीं है, लोगों को डराया जा रहा है। सभी परिवार पानी पीने के बाद बीमार हुए। इंदौर में लोगों को

पीने के लिए साफ पानी नहीं मिल सकता, पानी पीकर लोग मरते हैं। क्या यही है अर्बन मॉडल!



मेयर और पार्षद ने भागीरथपुरा में जल प्रदाय वाला पानी पिया

30 प्रतिशत आबादी को नर्मदा जल प्रदाय को पुनः प्रारंभ किया

जलप्रदाय को पुनः प्रारंभ

सभी जांच में जल सुरक्षित पाए जाने के बाद शुक्रवार को भागीरथपुरा क्षेत्र के लगभग 30 बहिस्से में, जिसमें लगभग 15 हजार की आबादी है, नर्मदा जलप्रदाय को पुनः प्रारंभ किया गया है। मेयर ने भागीरथपुरा क्षेत्र के नागरिकों से अपील की कि जलप्रदाय प्रारंभ होने के बाद भी सावधानी के तौर पर पानी को उबालकर ही उपयोग में लें। साथ ही नगर निगम, जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी की गई गाइडलाइन का पूर्ण रूप से पालन करें। उन्होंने कहा कि यदि क्षेत्र में किसी भी प्रकार की समस्या या असुविधा उत्पन्न होती है तो लोग तत्काल नगर निगम या जिला प्रशासन को सूचित करें, ताकि समस्या का त्वरित समाधान किया जा सके।

का प्रयास किया। इस दौरान मेयर ने कहा कि नगर निगम, जिला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग और क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों द्वारा भागीरथपुरा क्षेत्र में विगत दिनों से लगातार राहत एवं सुधारात्मक कार्य किए जा रहे हैं। इनमें क्षेत्र के नागरिकों का भी सहायता सहयोग प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि पिछले तीन दिनों से क्षेत्र में जल प्रदाय कर लगातार जल के सौंप लिए गए। इस दौरान सभी आवश्यक जांच और निर्धारित मापदंडों के अनुरूप पानी की गुणवत्ता सुनिश्चित की गई।

पीछे से तेज कार घुसी, युवक की मौत

इंदौर। बायपास पर शनिवार तड़के तेज रफतार कार आगे जाते ट्रक के पीछे से जा घुसी। इससे कार चालक की मौके पर ही मौत हो गई। हादसा लसूडिया क्षेत्र में शेरटन होटल के सामने हुआ। मृतक की पहचान बिचौली निवासी विक्रम सिंह राणा पिता परमजीत सिंह राणा के रूप में हुई। कार (एमपी 09 जेडएम 4545) तेज रफतार में थी और आगे चल रहे ट्रक से टकरा गई। ट्रकर इतनी जबरदस्त थी कि कार के एयरबैग खुलने के बावजूद चालक गंभीर रूप से घायल हो गया और घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। हादसे के बाद चालक का सिर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया सूचना मिलते ही लसूडिया थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए एमवाय अस्पताल भिजवाया। वहीं दुर्घटनाग्रस्त कार को क्रेन की मदद से सड़क से हटाया गया, जिससे यातायात बहाल हो सका। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और हादसे के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

युवक की हादसे में मौत, अज्ञात चालक पर केस

इंदौर। ड्यूटी खत्म होने के बाद ससुराल जा रहे युवक की बाइक को पीछे से अज्ञात वाहन चालक ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक चक्रान्तर हो गई। कनाड़िया पुलिस के मुताबिक हादसा रात करीब 9.30 बजे ग्राम बुराड़खेड़ी के पास हुआ। मृतक की पहचान मनीष गोयल (40) पिता मनोज गोयल निवासी दादरा मुंडला ग्राम देवगुड़ाइया के रूप में हुई है। मनीष अपनी बाइक से इंदौर से ससुराल ग्राम केमना की ओर जा रहा था। इसी दौरान रास्ते में किसी अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के बाद मनीष सड़क पर घायल अवस्था में पड़ा रहा। वहां से गुजर रहे लोगों ने उसे देखा और उसके मोबाइल से उसके साले को घटना की सूचना दी। इसके बाद एम्बुलेंस से मनीष को एमवाय अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान रात एक बजे उसकी मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि मनीष की पत्नी अपने मायके में ही थी। वह पेशे से लौडिंग वाहन चालक था। पुलिस ने अज्ञात वाहन के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

चेकिंग में पुलिस जवान घायल, चालक फरार

इंदौर। लसूडिया इलाके में गुरुवार देर रात उस समय हड़कंप मच गया, जब नशे में धुत कार चालक ने चेकिंग के दौरान पुलिसकर्मी को टक्कर मार दी। आरोपी तेज रफतार में बैरिकेडिंग तोड़ते हुए फरार हो गया। घायल पुलिसकर्मी को तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया। डीआरपी लाइन के पुलिसकर्मी सत्य साई स्कूल के पास ड्रिंक एंड ड्राइव अभियान चला रहे थे। रात 11 बजे एक इनोवा कार (एमपी-09-बीई-0227) तेज गति से चौराहे पर पहुंची। पुलिस को देखकर चालक ने गाड़ी नहीं रोकी, बल्कि रफतार बढ़ाकर बैरिकेडिंग उड़ा दी। कार को रोकने के लिए पुलिसकर्मी रवि चंद्रवंशी सामने आए, तभी चालक ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। इस घटना में रवि चंद्रवंशी घायल हो गए। आरोपी मौके से भाग निकला। हालांकि उसकी कार की नंबर प्लेट घटनास्थल पर गिर गई, जिससे वाहन की पहचान हो सकी। घटना के बाद अन्य जवान घायल पुलिसकर्मी को बॉम्बे अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उनका इलाज किया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें छुट्टी दे दी गई।

महिला ने आत्महत्या की, 2 साल का बेटा सोया फिर फांसी लगाई

32 साल की महिला एक दिन पहले ही मायके से आई थी

इंदौर। एक महिला ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। गांधी नगर इलाके में दोपहर को पति ने कमरे में उसे फंदे पर लटक देखा। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम किया है। महिला का मायका देवास में है। गांधी नगर पुलिस के मुताबिक, शुक्रवार दोपहर उन्हें सूचना मिली थी कि सुपर कॉरिडोर में रहने वाली मुस्कान (32), पति अधिन प्रजापति ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। घटना के समय वह अपने दो साल के बेटे के साथ कमरे में थी। दोपहर में बेटे को सुलाने के बाद उसने यह कदम उठाया। पति अधिन ने पुलिस को जानकारी दी। अधिन और मुस्कान की शादी को करीब चार साल हुए हैं। अधिन इलाके में ही एक कैफे संचालित करता है। बताया जाता है कि मुस्कान की सास सुबह घर से झगड़ा करने के बाद किसी रिश्तेदार के यहां चली गई थी। मायके पक्ष से मामी सीमा ने बताया कि आए दिन पति अधिन और सास सुनीता उसे किसी न किसी बात को लेकर पेशान करते थे। गुरुवार को मुस्कान अपने ससुराल आई थी। उसने पहले अपनी मां से इंदौर ससुराल आने की बात से इनकार किया था। लेकिन, परिवार के लोगों ने उसे समझा कर भेज दिया था। इसके बाद सुबह मां ने देवास से बेटे मुस्कान को कॉल किया। उसने फोन नहीं उठाया तो उन्होंने जमाई अधिन को कॉल किया। जब वह घर पहुंचा तो पत्नी फंदे पर थी। मुस्कान के परिवार में उसके दो भाई हैं, वहीं पिता नगर निगम में नौकरी करते हैं। पुलिस के मुताबिक, अभी मुस्कान के माता-पिता के बयान नहीं हो पाए हैं। मामले में जांच की जा रही है।

आज भारत-न्यूजीलैंड क्रिकेट मैच के कारण 12 बजे से कई मार्ग बंद

ट्रैफिक पुलिस ने जारी किया रूट प्लान, कौन से मार्ग बंद होंगे

इंदौर। होलकर स्टेडियम में कल 18 जनवरी को भारत-न्यूजीलैंड के बीच क्रिकेट मैच होगा। इसे देखते हुए शहर की यातायात व्यवस्था में बदलाव किया गया है। यह व्यवस्था दोपहर 12 बजे से मैच समाप्त होने तक लागू रहेगी। ट्रैफिक पुलिस के अनुसार, दर्शकों को स्टेडियम तक पैदल प्रवेश की अनुमति होगी। हुकुमचंद घंटाघर और पंचम की फेल्ट की ओर से आने वाले दर्शक जंजीरवाला चौराहे से प्रवेश कर सकेंगे। वहीं लेंटन चौराहे की ओर से आने वाले दर्शक पैदल चलते हुए सीधे स्टेडियम की ओर जा सकेंगे।

ये मार्ग रहेंगे प्रतिबंधित

पासधारी और आपातकालीन वाहनों को

छोड़कर अन्य सभी वाहनों के लिए लेंटन चौराहा से जंजीरवाला चौराहा, घंटाघर से जंजीरवाला व लेंटन चौराहा तथा पलासिया, हाईकोर्ट, लेंटन चौराहा मार्ग बंद रहेंगे। जबकि, दोपहर 12 बजे से मैच समाप्ति से एक घंटे पहले तक कई मार्ग पर यातायात डायवर्ट रहेगा। रीगल चौराहे से मधुमिलन की ओर सवारी वाहन भेजे जाएंगे। गीता भवन से घंटाघर जाने वाले वाहन ढकन वाला कुआं होकर श्रीमाया या मधुमिलन की ओर जाएंगे। रीगल से एमजी रोड और पलासिया की ओर जाने वाले मार्ग पर केवल सिटी बस और आपातकालीन वाहन ही चल सकेंगे। विजय नगर, मालवा मिल, इंडस्ट्री

हाउस सहित अन्य क्षेत्रों से आने-जाने वाले वाहनों के लिए वैकल्पिक मार्ग निर्धारित किए गए हैं। दर्शकों की सुविधा के लिए सिटी बसें घंटाघर और हाईकोर्ट चौराहे के आसपास यात्रियों को उतारेंगी, जहां से दर्शक पैदल स्टेडियम पहुंच सकेंगे।

यहां खड़े हो सकेंगे वाहन- यशवंत क्लब, अभय प्रशाला, आईटीसी, बास्केटबॉल कॉम्प्लेक्स, विवेकानंद स्कूल और आईडीए परिसर की पार्किंग केवल पास धारकों के लिए रहेगी। बाल विनय मंदिर स्कूल, एसजीएसआईटीएस कैम्पस और पंचम की फेल्ट मैदान में सभी के लिए पार्किंग उपलब्ध होगी।

पासधारी वाहनों के लिए व्यवस्था

- स्टेडियम की ओर केवल पासधारी वाहनों को ही प्रवेश की अनुमति रहेगी।
- विवेकानंद स्कूल और बास्केटबॉल कॉम्प्लेक्स में पार्किंग पास वाले वाहन घंटाघर की ओर से जाएंगे।
- स्टेडियम के अंदर-बाहर, आईटीसी और अभय प्रशाला की पार्किंग के लिए वाहन लेंटन चौराहा या यशवंत क्लब रोड से प्रवेश करेंगे।
- बिना पास वाले वाहनों के लिए बाल विनय मंदिर स्कूल, एसजीएसआईटीएस परिसर और पंचम की फेल्ट में पार्किंग की व्यवस्था की गई है, जहां 'पहले आओ-पहले पार्क करो' के आधार पर सुविधा मिलेगी।

छह वारदात, फिर भी चैन स्वेच नहीं पकड़ाया

इंदौर। चैन स्वेचिंग की छह वारदात करने के बाद भी बदमाश पुलिस के हथैथे आरोपी नहीं चढ़ पाया। वह पांच माह से लगातार वारदात कर रहा था। कुछ दिन पहले उसने मंदिर से लौट रही महिला को निशाना बनाते हुए चैन झपट ली। आरोपी हीरानगर, परदेशीपुरा और तिलक नगर थाना क्षेत्र में घटनाएं कर चुका है। ताजा मामला परदेशीपुरा थाना क्षेत्र के नंदानगर का है। फरियादी क्लर्क कॉलोनी निवासी चंचाबाई जैन की शिकायत पर स्कूटर सवार लुटेरे के खिलाफ चैन स्वेचिंग का मामला दर्ज किया है। पीड़िता गृहिणी है और रोज की तरह 13 जनवरी को दिगंबर मंदिर दर्शन करने गई थी। बदमाश पीछे से घर में घुस आया और झपट्टा मारकर उनके गले से सोने की चैन लूट ली। इस दौरान चैन का कुछ हिस्सा पीड़िता के हाथ में ही रह गया। पुलिस के अनुसार आरोपी इससे पहले 14 सितंबर को सुखिलिया क्षेत्र के माथेमा स्कूल के पास वारदात कर चुका है। इसके बाद उसने पंडित दीनदयाल नगर, तिलक नगर के जैन मंदिर, बख्तावर राम नगर और क्लर्क कॉलोनी में भी महिलाओं के साथ इसी तरह की घटनाओं को अंजाम दिया। अब परदेशीपुरा इलाके में चैन के साथ पर्स लूट की वारदात को भी अंजाम दिया गया है। हर बार की तरह इस बार भी पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर आरोपी की तलाश में जुटी है।

पार्टियों में 'एमडी' ड्रस सप्लाई करने वाले रैकेट का पर्दाफाश

इवेंट कंपनी संचालक समेत 3 को गिरफ्तार किया गया



नेहा (मुंबई) भी थीं। तलाशी में दोनों युवतियों के पास ड्रस की पुड़िया मिली। पार्टियों तक उनकी पहुंच- सूत्रों के अनुसार, अलीशा की 56 दुकान पर कपड़ों की शॉप है और वह ड्रस सप्लाई करती थी। बाबा के साथ इवेंट और

पैडलरों से तार जुड़े

गिराह के तार खजराना के गोल्डन और गुलाबबाग कॉलोनी से सागर उर्फ सैंडो और हेमंत जैन तक जुड़े थे। हेमंत की पत्नी 'आंटी' के नाम से ड्रस का कारोबार करती थी। इसके अलावा स्क्रीम-78, महालक्ष्मी नगर, विजय नगर, राजेंद्र नगर, खजराना और श्रीनगर कांकड़ के पैडलर भी बाबा से जुड़े थे। आरोपियों ने अपने लेनदेन की डिटेल्स छुपाने के लिए इंटरनेट और कॉलिंग ऐस का उपयोग किया।

प्रोफाइल पार्टियों में लड़कियों के जरिए ड्रस डिलीवरी कराई जाती थी।

गोवा की पार्टियों से तार जुड़े

बाबा शर्मा के तार गोवा के कई क्लब पार्टियों के अलावा अन्य प्रदेशों से भी जुड़े होने की बात सामने आई है। क्लबों में वह युवतियों की सहायता से आसानी से एमडी ड्रस सप्लाई करता है। बाबा किन लोगों से यह नशा लेता था, इसकी

जानकारी निकाली जा रही है। रिशु झा उर्फ नेहा, पुत्री अजय झा ने बताया कि वह मूलतः अंधेरी ईस्ट, मुंबई की रहने वाली है और आरोपी बाबा के साथ बड़े-बड़े क्लब और बार की पार्टियों में जाकर अवैध एमडी ड्रस की सप्लाई करती है। इसके अलावा आरोपी अलीशा मसीह उर्फ जैनी, पुत्री अनिल मसीह, रतलाम जिले की रहने वाली है।

मौनी अमावस्या पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक पत्रकार हैं।

हिन्दू धर्म में माघ मास को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है, जिसे कार्तिक मास के समान ही पुण्य मास माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार माघ मास में पवित्र स्नान एवं दान करने से व्यक्ति को पुण्य के समान फल की प्राप्ति होती है। वैसे तो इस मास में आने वाले सभी व्रत और त्योहारों का काफी महत्व है लेकिन इस माघ की अमावस्या का तो विशेष महत्व माना गया है। स्कंद पुराण में अमावस्या तिथि को पर्व कहा गया है और शास्त्रों के अनुसार माघ मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि का तो बड़ा महत्व है। इस अमावस्या तिथि को 'मौनी अमावस्या' के नाम से जाना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ऋषि मनु का अवतरण इसी दिन हुआ था और इसीलिए इसे 'मनु अमावस्या' भी कहा जाता है। यह दिन भगवान विष्णु और पितरों को समर्पित है और धार्मिक मान्यता है कि इस दिन पवित्र नदी में स्नान करने से पापों से छुटकारा मिलता है और पितरों की कृपा बनी रहती है। इस शुभ अवसर पर गंगा स्नान का तो विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन देवी-देवता पवित्र संगम में निवास करते हैं। ऐसे में गंगा का जल अमृत के समान माना जाता है। मौनी अमावस्या के दिन गंगा अथवा संगम में स्नान से तन-मन निर्मल होने के साथ निरोग काया के साथ पापों का क्षय होता है। हिन्दू पंचांग के अनुसार माघ मास के शुक्ल पक्ष की अमावस्या यानी 'मौनी अमावस्या' इस वर्ष 18 जनवरी को मनाई जा रही है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य जिस दिन चंद्रमा के साथ मकर राशि में विराजमान होते हैं, उसी दिन को मौनी अमावस्या कहा जाता है। मान्यता है कि माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में होता है, तब तीर्थपति प्रयागराज में देवता, ऋषि, किन्नर और अन्य देवगण तीनों नदियों के संगम में स्नान करते हैं। स्कंद पुराण में कहा गया है कि इस दिन भगवान सूर्य की उपासना और तर्पण आदि करने से व्यक्ति को पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है और इस दिन पवित्र नदियों में स्नान करने, व्रत, तर्पण और दान आदि करने से असंभव कार्य भी पूरे हो जाते हैं। इस बारे में महापुराण में कहा गया है कि इस दिन गंगा नदी में पवित्र स्नान करने के

मौन का महत्व और आत्मिक शांति का पर्व

पश्चात् व्यक्ति को तिल तथा गुड़ से तर्पण आदि करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से व्यक्ति पुण्य का भोगी होता है और सभी पापों से मुक्त हो जाता है। विभिन्न पुराणों के अनुसार इस दिन सभी पवित्र नदियों और पवित्र पावनी मां गंगा का जल अमृत के समान हो जाता है, इसीलिए इस दिन गंगा स्नान करने से अश्वमेध यज्ञ करने के समान फल मिलता है। गंगा को तो हिन्दू धर्म में वैसे भी सबसे पवित्र



नदी माना गया है। मौनी अमावस्या के दिन मौन धारण कर गंगा-यमुना-सरस्वती की त्रिवेणी में स्नान करने को तो सर्वोत्तम माना गया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सभी पवित्र नदियों में इस दिन देवताओं का वास होता है, इसीलिए इस पावन दिन गंगा स्नान और संगम स्नान का तो विशेष महत्व है। माघ माह में संगम स्नान के महत्व को लेकर एक कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि जब सागर मंथन से भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, तब उस अमृत कलश के लिए देवताओं एवं असुरों में

जबरदस्त खींचतान शुरू हो गई और खींचतान के दौरान अमृत कलश से अमृत की कुछ बूँदें छलककर प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में जा गिरी थी। इसीलिए मान्यता है कि इन तीर्थ स्थलों की नदियों में स्नान करने पर अमृत स्नान का पुण्य प्राप्त होता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जो पुण्य सतयुग में तप से मिलता है, त्रेता युग में ज्ञान से, द्वापर युग में ईश्वर की भक्ति

अमावस्या के दिन मौन व्रत धारण कर ईश्वर का स्मरण करने से मुनि पद की प्राप्ति होती है और प्राणी की आध्यात्मिक ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। मौन का अध्यात्म के शिखर को छूने में अहम योगदान होता है, इसीलिए मौन का अध्यात्म जगत में सदैव महत्वपूर्ण स्थान रहा है। दरअसल मौन को भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक शिखर तक पहुँचने का सबसे सटीक और शाश्वत माध्यम माना गया है। इसीलिए हमारे साधु-संतों और ऋषि-मुनियों ने सदैव इसे अपनी आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण अंग बनाया। आचार्य चाणक्य से लेकर गौतम बुद्ध और महर्षि दयानंद सरस्वती तक सभी महापुरुषों का जीवन मौन का पर्याय ही था। गोस्वामी तुलसीदास ने तो मौन को ही सभी साधनाओं का आधार माना है। आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शुद्धि के लिए मौन रहना सबसे उत्तम माना गया है।

धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों को करने के लिए मौनी अमावस्या की तिथि बहुत उत्तम मानी जाती है। मौनी अमावस्या के दिन मौन एवं संयम की साधना, स्वर्ग एवं मोक्ष देने वाली मानी गई है। पद्य पुराण में कहा गया है कि मौनी अमावस्या के दिन मौन रहकर किए गए जप-तप और दान से भगवान विष्णु बहुत प्रसन्न होते हैं और इससे विशेष धर्म लाभ प्राप्त होता है। हालांकि मौन रहने का वास्तविक अर्थ बाहरी दुनिया से दूर रहकर ईश्वर का स्मरण करते हुए अपने अंतर्मन में झाँकना, आत्ममंथन करना, अपने अंदर की अशुद्धियों को दूर करना और मन को शुद्ध करना ही है, मौन का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि आपने मुँह से तो बोलना बंद कर दिया यानी मौन व्रत धारण कर लिया लेकिन आपका मन विचलित है और बुरे विचारों या बुराईयों से भरा पड़ा है। हमारे भीतर की नकारात्मकता तभी दूर होगी और हमारे अंदर आध्यात्मिकता का विकास भी तभी होगा, जब हम मौन रहकर अपने मन को एकाग्रचित्त करते हुए सच्चे मन से ईश्वर का स्मरण करेंगे। कहा गया है कि यदि किसी व्यक्ति के लिए मौन रखना संभव न हो तो वह अपने विचारों को शुद्ध रखे और मन में किसी प्रकार की कुटिलता का भाव नहीं आने दे।

लघुकथा

प्रकृति से संस्कृति तक



डॉ. जीवन एस रजक

कभी वह वन में था
नगे पैरों से धरती को मापता
हवा से संवाद करता
और आँसु से भय खाता
उसकी आँखों में प्रकृति थी
निरावृत, अनागढ़
परन्तु जीवन से भरी हुई

वह न ईश्वर को जानता था
न धर्म को
न पाप जानता था न पुण्य
उसके लिए भूख धर्म थी
सुरक्षा कर्म और प्रकृति ईश्वर

फिर धीरे-धीरे उसने देखा
रात्रि के नक्षत्रों में कोई संकेत है
वर्षा की गंध में कोई रहस्य है
और मृत्यु के मौन में कोई प्रश्न

यहीं से प्रारंभ हुई
संस्कृति की यात्रा
जब उसने पहली बार
प्रकृति को अर्थ देना शुरू किया

वह गाने लगा गीत
रचने लगा गायणें
चित्रों में जीवन बुनने लगा
और जो कभी जानवरों के बीच
जिंदा रहने की होड़ में था
देखने लगा अब देवताओं के स्वन

उसने घर बनाए
जीने के नियम गढ़े
धर्मशास्त्रों को रचा
और स्मृतियों को बांध दिया शब्दों में

संस्कृति-
उसकी चेतना की वह मिट्टी बनी
जिसमें वह अपनी ही मानवता
पीढ़ी दर पीढ़ी बोता रहा

संस्कृतिकरण की इस यात्रा ने
एक सवाल को जन्म दिया
क्या संस्कृति अलग है प्रकृति से
या प्रकृति का ही एक जागृत रूप

क्योंकि जब-जब मनुष्य
संस्कृति में उलझकर, प्रकृति से कटा
वह भीतर से रिक्त होता गया

आज जब उसने पार कर लिया है
अंतरिक्ष की सीमाओं को
तो क्या वह
भूल चुका है अपने भीतर का अरण्य
क्या संस्कृति की उँचाइयों ने
उसे अपने ही मूल से दूर कर दिया है

या अब भी समय है-
कि वह लौटे प्रकृति की ओर
चैतन्य होकर, करुणा के साथ

क्योंकि मनुष्य की यात्रा
केवल प्रकृति से संस्कृति तक ही नहीं
संस्कृति से पुनः प्रकृति तक भी है
जहाँ दोनों मिलकर एक हो सकें
और मनुष्य, फिर से संपूर्ण हो सके।

कोलाज कला

केनवास पर आत्मा
की अभिव्यक्ति

दिनेश विजयवर्गीय

प्रकृति के हरे भरे रंग रूप से प्रभावित होने वाले कलाकार अपने अंतर मन में सुख शांति पाकर और अच्छे सृजन के लिए प्रोत्साहित होते रहते हैं। वह जब भी अपने कला सृजन में जीने लगते हैं तो उनके मन में एक उत्कृष्ट कला का भाव बनने लगता है। और फिर यही चिंतन भरा भाव कलाकृति बनाने हेतु उन्हें सदा तरो ताजा बनाए रखता है। कला के प्रति समर्पित कलाकार कितने भी लंबी उम्र जिए, पर वह समय-समय पर अपनी कला सृजन की दुनिया में जीना अपना सौभाग्य मानता है।

कला जगत में एक ऐसे ही कला सृजन धामी हैं, कोटा के 74 वर्षीय सेवा निवृत्त स्कूल व्याख्याता सुभाष केकरे। जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से चित्रकला में प्रथम श्रेणी प्राप्त कर गेंगे की दुनिया में जीने वाले केकरे अभी तक कई एकल व समूह प्रदर्शनों तथा कला मेलों में भाग ले चुके हैं। उनकी कई कला कृतियाँ विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं।

कोलाज कला को लेकर उनका सोच है कि यह आत्मा की अभिव्यक्ति है। अंतर्मन में जो कुछ चिंतन होता है उसकी प्रस्तुति ही कला है। एक कलाकार प्रकृति सुंदरता से जितना प्रभावित होता है उसकी कला भी उतना ही प्रभाव छोड़ती है। कला व्यक्ति के जीवन की सराग को गुनगुनाये रख जीवन में नया उत्साह बनाए रखती है। स्केच कला में एकसपट्ट सुभाष केकरे कोलाज कला में भी अपनी उत्कृष्टता का प्रदर्शन कर चुके हैं। उनका कहना है कि 'बिना रंग पेंसिल से निर्मित होने वाली यह कला कल्पना के आधार पर बनने वाली कला है। मेरे कला मन ने कामाज के रंग-बिरंगे चित्रों से नया सृजन किया। घर पर रद्दी में पड़ी पत्र पत्रिकाओं में से जरूरत अनुसार रंगीन चित्र काटकर उन्हें अपनी कल्पना के अनुसार प्रस्तुत करता हूँ। चित्रों को फैंकिंग के माध्यम से हार्ड बोर्ड या शीट पर चिपका कर यथासंभव आकर्षक लुक बनाए रखने के लिए ऐंकेलिक कलर वार्निश का उपयोग करता हूँ।'

'पत्रिकाओं में से चित्र काटते समय यह ज्ञान होना चाहिए कि कहां पर किस तरह से चित्र बनेगा इसके लिए कई पत्रिकाओं के चित्रों को सृजन के विजन में देखा जाता है। चित्र पहले बनता है, उसका शीर्षक बाद में तय होता है। उनका सोच है कि उत्कृष्ट कला के लिए कला सृजन के प्रति मेहनत लगाना व समर्पण होना चाहिए। कला की बेहतरीन प्रस्तुति के लिए धैर्य की जरूरत होती है। रंगीन पत्र पत्रिकाओं को रद्दी में डालने से पहले उसके रंगीन उपयोगी चित्र काट लेना चाहिए। जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले केकरे अपनी कला की प्रस्तुति भी अपने इसी दृष्टिकोण से करते रहते हैं। उनका सोच की एक कलाकार को अपनी कला के प्रति जीवन भर समर्पित होकर सृजन करते रहना चाहिए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटेर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जेन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल

(सभी विवाहों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/2003/10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subhassaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं।
इन्हें समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

खुशियों की मकर संक्रांति

बाल कहानी

सूर्यदीप कुशवाहा



अभिभव अपने घर की छत पर खड़ा आसमान को निहार रहा था। जनवरी की ठंडी हवाओं के बीच सूरज की गुनगुनी धूप बहुत सुहावनी लग रही थी। आज मकर संक्रांति का त्योहार था। पूरे मोहल्ले की छतें बच्चों के भा-कटे की शोर से गुंज रहा था और चारों तरफ आसमान रंग-बिरंगी पतंगों से सराबोर था। आज पतंगबाजी के नियम और सुरक्षा का पालन घर के बड़े उन्हें समझा रहे थे और साथ में सभी इस उत्सव का आनंद भी ले रहे थे।

अभिभव के पास एक बहुत ही सुंदर बड़ी लाल पतंग थी, जिसे उसने शहर के बड़े दुकान से मगवाया था। उसके पापा ने उसे मांडा पकड़ना और पतंग उड़ाना सिखाया था। अभिभव बड़ी कुशलता से अपनी पतंग को आसमान की ऊँचाइयों तक ले जा रहा था। तभी उसकी नजर पास वाली छोटी छत पर पड़ी। वहाँ एक छोटा लड़का, जिसका नाम मोलू था, चुपचाप खड़ा दूसरों की पतंगें देख रहा था। मोलू के हाथ में एक छोटी सी बहुत ज्यादा फटी हुई पतंग थी और उसकी आँखों में मायूसी थी।

अभिभव समझ गया कि मोलू के पास न तो अच्छी पतंग है और न ही नया मांडा। अभिभव को याद आया कि उसकी मां ने सुबह ही कहा था, 'बेटा, मकर संक्रांति केवल पतंग उड़ाने का त्योहार नहीं है, बल्कि यह खुशियों बांटने और दान-पुण्य करने का महत्वपूर्ण पर्व है।'

अभिभव ने अपनी लाल पतंग की डोर अपनी कलाबाजी से ढीली की और उसे मोलू की छत की तरफ



उतारा। मोलू ने हैरान होकर देखा। अभिभव चिल्लाया, 'मोलू! क्या तुम मेरे साथ पतंग उड़ाओगे? यह लाल पतंग अब तुम्हारी है!' मोलू के चेहरे पर अचानक एक खुशी की मुस्कान तैर आई। उसने दौड़कर पतंग की डोर कनी बांध कर उसे आसमान में उड़ाया और फिर दोनों मिलकर पेंच लड़ने लगे।

दोपहर हुई तो अभिभव की माँ छत पर ताजा बना गुड़-तिल के लड्डू और खिचड़ी लेकर आईं। उन्होंने मोलू और उसके परिवार को भी अपने घर पर आमंत्रित किया। सबने मिलकर मकर संक्रांति के पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लिया। अभिभव के पापा ने बच्चों को

बताया कि मकर संक्रांति पर सूर्य देव 'उत्तरायण' होते हैं, जिसका अर्थ है अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना। शाम होते-होते अभिभव ने महसूस किया कि आज उसे अपनी पतंग उड़ाने से उतनी खुशी नहीं मिली, जितनी मोलू की मदद करके और उसके साथ खुशियाँ बांटकर मिली। उसने सीखा कि त्योहारों का असली मजा अपनों के साथ-साथ दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाने से मिलती है। सूरज ढलने लगा था, लेकिन अभिभव के मन में संतोष का सूरज चमक रहा था। जिससे वह दमक रहा था।

इस तरह अभिभव और मोलू के लिए यह मकर संक्रांति सबसे यादगार बन गई।

यात्रा संस्मरण

मोहन वर्मा

लेखक पत्रकार हैं।

अपने पर्यटन प्रेम के चलते इस बार 'रन ऑफ कच्छ' देखने का अवसर हाथ लगा। पर्यटन से जुड़ी संस्था यूथ हॉस्टल की गुजरात शाखा द्वारा अपने पर्यटन प्रेमी सदस्यों के लिये इस बार 7 से 11 जनवरी तक 'रन ऑफ कच्छ' का आयोजन किया गया था जिसमें देशभर के 125 से अधिक सदस्यों ने रन महोत्सव का आनंद उठाया, जिसमें मालवा और इंदौर, उज्जैन युनिट के 11 साथियों में हम भी शामिल रहे और इस संवाद की सच्चाई से रूबरू हुए कि जिसने कच्छ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा।

उत्साह से लबरेज हमने 5 जनवरी की रात अहमदाबाद शहर भ्रमण के साथ वहाँ रिवर फ्रंट, अटल ब्रिज पर चल रहे फ्लावर शो के आनंद के साथ गुजराती खमण, गुजराती थाली का स्वाद लिया, स्वामी नारायण मंदिर के दर्शन किये आने वाले उतरण पर्व का जोश देखा और रात भुज के लिए प्रस्थान किया।

7 जनवरी की सुबह समूह के साथियों का भुज आगमन शुरू हुआ जिन्हें त्रिमंदिर परिसर और होटल्स में ठहराया गया था। नारते के बाद भुज भ्रमण में पहुँचे स्मृति वन। सात खण्डों में निर्मित स्मृति वन 26 जनवरी को गुजरात के कच्छ क्षेत्र में आये विनाशकारी भूकम्प पर आधारित है जिसमें 20 हजार से अधिक लोगों ने जान गंवाई थी, 10 लाख से अधिक लोग बेघर हुए थे और करोड़ों की सम्पत्ति का नुकसान हुआ था। भूकंप के कारण, हृदय से और विनाश की जानकारी, और फिर प्रदेश सरकार, केन्द्र और विश्व के अन्य देशों की मदद, जन जन की इच्छाशक्ति सहायता से गुजरात के



पुनर्निर्माण देखने लायक है। भुज में ही तात्कालिक राजवंश के अवशेषों के रूप में संग्रहित आईना महल-प्राग महल के साथ विशाल स्वामीनारायण मंदिर भी देखने लायक है।

अगले दिन कारवाँ भुज से कच्छ के रास्ते रन ऑफ कच्छ के लिए रवाना हुआ। रास्ते में कड़ियाँ धुवो जो

कि विश्व धरोहरों में शामिल है, वहाँ रेतिले रास्ते जीप के द्वारा पहुँचकर खूबसूरत प्राकृतिक पथरों के बीच उन धरोहरों से रूबरू हुए जिनमें समय के साथ साथ अब भी बदलाव नजर आता है। पालनपुर में भोजन के बाद हमारा कारवाँ पहुँचा छरी धाण्ड जो पक्षी अभ्यारण्य के रूप में प्रसिद्ध है मगर दुर्भाग्य से हम उन साइबेरियन

पक्षियों की अठखेलियों को नजदीक से देखने से वंचित ही रहे।

रात दोरदो स्थित कच्छ रिसॉर्ट में स्थित टेंट सिटी में पहुँचे जहाँ आयोजकों द्वारा शानदार भोजन और विश्राम व्यवस्था की थी। अगले दिन सुबह की शुरुआत बेहतरीन गुजराती नारते से हुई और कारवाँ काला ढांड स्थित गुरु दत्तात्रेय मंदिर और पक्षी अभ्यारण्य पहुँचा। इसके बाद चुम्बकीय क्षेत्र होते हुए वापस बैस कैम्प पहुँचे जहाँ भोजन, विश्राम के बाद शाम क्विंट डेजेंट गये। दूर दूर तक फैले नमक के रेतिले सूखे समंदर पर पर्यटकों ने खूब आनंद उठाया रात गुलाबी ढण्ड में बैस कैम्प में समूह के सभी साथियों ने अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के साथ कैप फायर का आनंद लिया।

अगली सुबह खावडा से धोलावीरा के 60 किलोमीटर के सफर में 30 किलोमीटर के रोड टू हेवन से गुजरना यादगार रहा जहाँ सड़क के दोनों तरफ हरहरातानी जो कभी भरपूर बरसात में तलाबब तो तेज गर्मी में कच्छ का लिटिल रन बन जाता है, सुन्दर नजारा कच्छ का, जिसके बाद पहुँचे धौलावीरा-पाँच हजार साल पुरानी हड़प्पा संस्कृति के अवशेष जो विश्व धरोहरों में शामिल है। वहाँ स्थित संग्रहालय, प्रसिद्ध म्युजियम देखने के बाद वापस बैस कैम्प में जहाँ रात्रि विश्राम के बाद सभी की वापसी की तैयारी।

भुज के यूथ हॉस्टल के आयोजकों की मेहनत, मेहमाननवाजी और देश के अनेक हिस्सों से आये पर्यटनप्रेमियों के आपसी प्रेम व्यवहार ने इस दूर को यादगार बना दिया।

वेदों में समाया है शिल्प और रहस्यमय कृतियों का संसार

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक



जी वन रहस्यमय परिस्थितियों के जंजाल में जकड़ा हुआ है, परिस्थितियाँ भी ऐसी कि कई काल के कवलिता हो जाने के बाद भी पहलियों पर से पर्दा उठ पाना संभव नहीं हो सका है और आज भी लोग उसे सुलझाने में लगे हुए हैं, आश्चर्य नहीं होगा कि कुछ पहलियों कभी नहीं सुलझाई, सुलझनी भी नहीं चाहिए नहीं तो नये का सृजन ही संभव नहीं होगा। इन्हीं पहलियों के भरोसे लोग अपनी-अपनी रोटियाँ सँकने पर लगे हुए थे, हैं और रहेंगे। ऋग्वेद के दसवें मंडल के 129वें सूक्त, नासदीय सूक्त के सातों मंत्रों में जीवन के रहस्यमय परिस्थितियों, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, अस्तित्व आदि का जिक्र है। 'तब न तो सत् था न ही असत् था, अंतरिक्ष, आकाश, जीवन, मृत्यु, दिन-रात, जैसी भी कोई बातें नहीं थीं।

'तम आसीत्तमसा गुहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वऽइदम्।

तुच्छयेनाभवपिहितं यदासीत्तपस्तन्महिना जायतेकम्।' (ऋ.10/129/03)

(अग्ने) सृष्टि होने के पूर्व, (तमः आसीत्) तमस् था। वह सब (तमसा गुहम्) तमस् से व्याप्त था। वह (अप्रकेतम्) ऐसा था कि उसका कुछ भी विशेष ज्ञान योग्य न था। वह (सलिलं) सलिल, एक व्यापक गतिमत् तत्व था जो (सर्व इदम् आ) इस समस्त को व्यापे था। उस समय (यत्) जो था भी वह (तुच्छयेन) तुच्छ, सूक्ष्म रूप से (आभू-अपिहितम्) चायों और का सब विद्यमान पदार्थ से ढका था। (तत्) वह (तपसः महिना) तपस के महान सामर्थ्य से (एकम्) एक (अजायत) प्रकट हुआ। (ऋ.10/129/03, जयदेव शर्मा)।

तमस् (अंधकार, अज्ञान) और सृष्टि पर इतने गहन अध्ययनों के बाद भी अंत में प्रश्न रह ही जाता है कि

कौन और कैसे? इसी सूक्त के छठे मंत्र में कौन है जो इन रहस्यों को जानता है, जिससे यह जगत प्रकट हुआ? प्रश्न रह ही जाता है हालांकि कुछ लोग निष्कर्ष तक भी पहुँचते हैं, पहुँचने के प्रयास में कुछ और भी होंगे पर बात फिर वहीं आकर रुक जाती है कि क्या जबकि सृष्टि, शून्य से ब्रह्माण्ड तक के सफर को अनगिनत वर्षों से पूरी करती चली आ रही है, में ये निष्कर्ष सभी के गूढ़ प्रश्नों का उत्तर होगी या अन्तिम होगी? नहीं बिल्कुल नहीं बल्कि हमेशा किसी नये अर्थों हेतु द्वार जरूर खुला रहेगा। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। कला सृष्टि या ब्रह्माण्ड से इतर नहीं है या कह सकते हैं कि पहले जब केवल और केवल अंधकार और बस अंधकार ही था कला तब भी थी और वह एक जो अस्तित्व में आया, शून्य में घिरा हुआ, अंततः ज्ञान की शक्ति से उत्पन्न हुआ, कला तब भी थी। कला हमेशा से थी और कला हमेशा रहेगी।

इश्वर को मानने वाले लोग इन सभी पहलियों को इश्वर प्रदत्त मानते हैं, प्रकृति के एक-एक वस्तुओं, घटनाओं को इश्वर के इशारे पर ही चलने वाला मानते हैं और न मानने वाले भी कम से कम इतना तो मानते ही हैं कि चीजें जिस तरीके से एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, तरीके से चल रही हैं कुछ तो हैं, कोई तो है जो सभी को संयोजित किए हुए है। धरा पर पलने वाला हर जीव अभिनय के मंच पर अपने-अपने हिस्से का अभिनय करता है और समय आते ही वही पात्र जो पूरे मनोयोग से अपने हिस्से का अभिनय कर रहा होता है, अपात्र हो जाता है और देह त्याग देता है।

प्रकृति यँ ही चलती रहती है। संसार ऐसे ही चलता

आ रहा है और अच्छी बात ये है कि इश्वर को न मानने वाले लोग भी इस प्रकृति को मानते हैं और अनजाने में ही सही कोई तो है जिससे ये संसार चलायमान है, जो हर पात्र को नियंत्रित कर रहा है ऐसा मानते हैं। दुःख तो तब होता है जब अपने से पूर्व के तीन-चार पीढ़ी वालों के

अपना पूरा जीवन काल खपा देने के बाद भी खुद को अधूरे ही मानते रहें, अंधेरे में व्याप्त अंधेरी बातों तक ही पहचानते रहे, जो पता नहीं कितने कालों तक सिर्फ और सिर्फ श्रवण परंपरा में चलती रही और अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होती रही और जिसके लिपिबद्ध होने के



नाम न जानने वाले संसार के सृजनकर्ता का प्रमाण मांगते हैं, उनके समय काल को अंकों में बांधने का प्रयास करते हैं और मिलने न मिलने की अवस्था में अपने-अपने हिसाब से गोटियाँ फिट करते हैं ऐसी ही गोटियाँ हमारे वेदों, ब्रह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों पुराणों आदि को लेकर भी बिठायी जाती रहा है और आश्चर्य कि जिन वेदों और पुराणों के अध्ययन में हमारे ऋषि-मुनि, ज्ञानी

समय का कोई प्रमाणिक ज्ञान नहीं है उसे एक सीमा में बांधने की ठसक ने किसी ऐसे को जो देश के बाहर से आकर (मैक्समूलर भारत आया था भी या नहीं संशय है) पहले संस्कृत का अध्ययन करता है फिर वेदों का अध्ययन करता है वो भी बहुत कम समय तक, द्वारा निर्धारित काल को वेदों का काल माना जाने लगाता है। इस विशाल गहन अंधेरे-युक्त ब्रह्माण्ड में जहाँ करोड़ों

जीवन एक साथ मिलकर कर भी शून्य से अधिक नहीं होंगे, जहाँ अस्तित्व-अस्तित्व के बीच भी शून्यता व्याप्त है, कोई एक खुद को विशाल अस्तित्व युक्त मानकर इन सभी के प्रमाणिकता का प्रमाणपत्र बाँटते की जुगत भी कैसे कर सकता है? क्या सांसारिक सृजन, सृष्टि के रहस्य से पर्दा कभी उठ सका? क्या वेदों के समय काल पर से भी पर्दा उठने की उम्मीद वो भी वास्तविकता के साथ है? नहीं है। फिर समय काल से परे होकर हमें अध्ययन की आवश्यकता है। वेद के प्रमाणिकता पर सवाल उठाने वालों से नासदीय सूक्त जिसका जिक्र अभी हुआ और जहाँ ब्रह्मांड की उत्पत्ति का बिल्कुल ही दार्शनिक अंदाज में उत्कृष्ट रूप में वर्णन मिलता है, हालांकि पूर्णता को प्राप्त है या नहीं है इससे इतर यह है कि विज्ञान में ऐसे ही प्रकृति को विंग बैंग थियरी के रूप में जाना जाता है, गाया जाता है जो वेदों में पूर्व से ही विद्यमान है। सात मंत्रों के इस सूक्त ने संसार के लोगों का ध्यान खींचा है और अध्ययन का केन्द्र विंदु भी बना है, फिलहाल भारतीय वेदों जिन्हें अपौरुषेय माना जाता है, के काल और प्रमाणिकता पर प्रश्न उठाने वालों को पहले खुद के अस्तित्व पर प्रश्न उठाना चाहिए। वेदों में प्रत्येक मंत्र में जिनकी स्तुति होती है, को देवता (विषय) कहा जाता है और जिसने मंत्र के अर्थ का सर्वप्रथम प्रदर्शन किया, ऋषि होता है। पाश्चात्य विद्वान इन्हीं ऋषियों को ही रचयिता मान बैठते हैं। खैर हमारे वेद, पुराण हमारी थाती हैं और इन पर कितनी भी चर्चा हो कम है और बड़ी बात और भी है कि यहाँ रचे मंत्रों के अर्थ भी अनेक हैं जिन्हें लोग अपने अपने हिसाब से अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधते हैं जिसका प्रमाण हमें कला के अधिकतर पुस्तकों से प्राप्त होता है। वेदों में, पुराणों, उपनिषदों में कला पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में कला पर विषद जानकारी उपलब्ध है जिस पर चर्चा आगे चलकर गहराई से होगी। जहाँ मनुष्यों के दैहिक प्रमाण से लेकर मंदिर निर्माण और मंदिर को मनुष्य के शरीर से तुलनात्मक अध्ययन तक का बड़े गहनता के साथ जिक्र है। चित्र, मूर्ति, काव्य, संगीत सब पर चर्चा वेदों में उपलब्ध है, पुराणों में उपलब्ध है। संलग्न कलाकृति साभार गूगल से है।

इंदौर का अनूठा राष्ट्रभक्ति उत्सव

'झंडा ऊँचा रहे हमारा

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।



अ इंदौर को आज देश स्वच्छता के सिरमौर के रूप में जानता है। लेकिन अपने इंदौर की पहचान सिर्फ साफ सड़कों, सुंदर चौराहों और विकास के बड़े प्रोजेक्ट्स तक सीमित नहीं है। इंदौर की असली पहचान उसकी प्रगतिशील नागरिक चेतना है। इस शहर में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सक्रियता, जल-संरक्षण, हरियाली बढ़ाने के अभियान, तालाबों और बावडिण्डों के संरक्षण, साहित्यिक गतिविधियाँ, कवि गोष्ठियाँ, पुस्तक संस्कृति, रंगमंच और सामाजिक सरोकार और राष्ट्रप्रेम ये सब इंदौर की प्रगतिशीलता को परिभाषित करता है।

लेकिन इंदौर की एक पहचान और है, जो शायद सबसे ज्यादा गर्व करने लायक है यहाँ राष्ट्रीय दिवस एक उत्सव के रूप में मनाये जाते हैं। शहर की सामूहिक चेतना का हिस्सा बन चुका है। सेवा सुरभि के बैनर तले क्रियान्वित 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने इंदौर को देश के उन गिने-चुने शहरों में खड़ा कर दिया है, जहाँ राष्ट्रीय पर्व एक जन-आंदोलन का रूप लेते हैं। 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने राष्ट्रप्रेम को मंच से उतारकर सड़कों, चौराहों, स्कूलों और आम लोगों के दिलों तक पहुँचा दिया है।

यह अभियान आज अपने 24वें वर्ष में है और अगले वर्ष इसका रजत जयंती वर्ष होगा। यह इस बात का प्रमाण है कि इंदौर ने राष्ट्रप्रेम को एक स्थायी परंपरा में बदल दिया है। ऐसी परंपरा, जो आदेशों से नहीं, नागरिक सहभागिता से चलती है। जो औपचारिकता से नहीं, आत्मीयता से आगे बढ़ती है।

झंडा ऊँचा रहे हमारा को और भी जीवंत बनाने हैं वे सांस्कृतिक और वैचारिक आयोजन, जिनमें देश के प्रसिद्ध कवि, कलाकार, संगीतज्ञ, विचारक और सामाजिक कार्यकर्ता हिस्सा लेते रहे हैं। कविताओं, गीतों, संवादों और प्रस्तुतियों के जरिये राष्ट्रप्रेम को नए अर्थ मिलते हैं।

इस अभियान की सबसे भावुक और सशक्त झलक 25 जनवरी की शाम को मिलती है, जब रिंगल चौराहे पर अनाम शहीदों की स्मृति में हजारों नागरिक हजारों मोमबतियाँ प्रज्वलित कर श्रद्धा समुन अर्पित करते हैं। उस समय पूरा इंदौर एक स्वर में श्रद्धा से झुक जाता है। बच्चे, युवा, महिलाएँ, बुजुर्ग सब बिना किसी भेदभाव के एक साथ खड़े होकर उन शहीदों को नमन करते हैं, जिनके नाम हम नहीं जानते, लेकिन जिनकी वजह से हम आजाद हैं। वह बताता है कि राष्ट्रप्रेम इंदौर में किताबों में नहीं, दिलों में बसता है।

इसी तरह शहीद परिवारों का सम्मान इस अभियान की आत्मा है। हर वर्ष उन परिवारों को सम्मानित कर इंदौर यह संदेश देता है कि बलिदान केवल इतिहास की बात नहीं, बल्कि वर्तमान की जिम्मेदारी है। यह सम्मान नई पीढ़ी को यह सिखाता है कि राष्ट्रभक्ति सिर्फ नारों से नहीं, कृतज्ञता और संवेदना से बनती है।

सेवा सुरभि द्वारा रिंगल चौराहे पर स्थापित इंडिया गेट की प्रतिकृति गणतंत्र उत्सव का प्रतीक बन चुकी है। यहाँ जब सैकड़ों स्कूली बच्चे देशभक्ति गीतों

इंदौर की एक पहचान और है, जो शायद सबसे ज्यादा गर्व करने लायक है यहाँ राष्ट्रीय दिवस एक उत्सव के रूप में मनाये जाते हैं। शहर की सामूहिक चेतना का हिस्सा बन चुका है। सेवा सुरभि के बैनर तले क्रियान्वित 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने इंदौर को देश के उन गिने-चुने शहरों में खड़ा कर दिया है, जहाँ राष्ट्रीय पर्व एक जन-आंदोलन का रूप लेते हैं। 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने राष्ट्रप्रेम को मंच से उतारकर सड़कों, चौराहों, स्कूलों और आम लोगों के दिलों तक पहुँचा दिया है। यह अभियान आज अपने 24वें वर्ष में है और अगले वर्ष इसका रजत जयंती वर्ष होगा। यह इस बात का प्रमाण है कि इंदौर ने राष्ट्रप्रेम को एक स्थायी परंपरा में बदल दिया है। ऐसी परंपरा, जो आदेशों से नहीं, नागरिक सहभागिता से चलती है। जो औपचारिकता से नहीं, आत्मीयता से आगे बढ़ती है।



की सामूहिक प्रस्तुति देते हैं, तो लगता है मानो राष्ट्र स्वयं बच्चों की आवाज में बोल रहा हो। यह दृश्य बताता है कि यह केवल वर्तमान का नहीं, भविष्य का भी निर्माण कर रहा है। बच्चों के मन में राष्ट्रप्रेम का बीज यहाँ पड़ता है, और वही बीज आगे चलकर जिम्मेदार नागरिक बनाता है। इंदौर की अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और युवा संस्थाएँ गणतंत्र दिवस को जनोत्सव का रूप देने में सक्रिय भूमिका निभाती आई हैं। रंग-ए-महफिल, वनबंधु परिषद, अभिनव कला समाज, स्टेट प्रेस क्लब, श्री गीता रामेश्वरम ट्रस्ट, इंदौर मैनेजमेंट एसोसिएशन, भारत विकास परिषद, लायंस और रोटर क्लब जैसे संगठनों से लेकर एनसीसी, एनएसएस, स्काउट-गाइड और विभिन्न स्कूल-कॉलेजों की इकाइयाँ तक, सभी अपने-अपने स्तर पर इस राष्ट्रीय पर्व को जीवंत बनाती हैं। यही सामूहिकता इंदौर को प्रदेश में अलग पहचान देती है।

इस पूरे आयोजन की सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह किसी एक संस्था का कार्यक्रम नहीं है। जिला प्रशासन के नेतृत्व में इंदौर नगर पालिक निगम, इंदौर विकास प्राधिकरण, इंदौर पुलिस, सेवा सुरभि और शहर की अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ मिलकर इसे एक जन-आंदोलन का

स्वरूप देती हैं। शासन, प्रशासन और समाज का ऐसा समन्वय प्रदेश में दुर्लभ है। यही कारण है कि 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान आज इंदौर की पहचान बन गया है और मध्यप्रदेश में इसे 'इंदौर मॉडल' के रूप में देखा जाता है।

'झंडा ऊँचा रहे हमारा' इसी प्रगतिशील चेतना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यहाँ नागरिक स्वयं आगे बढ़कर भागीदारी करते हैं। यही नागरिक अग्रणीता इस अभियान को विशेष बनाती है। आज जब राष्ट्रप्रेम को अक्सर शोर, विवाद और विभाजन से जोड़ा जाने लगा है, तब इंदौर का यह अभियान हमें याद दिलाता है कि राष्ट्रप्रेम का सबसे सुंदर रूप समावेशिता है। यहाँ हर धर्म, हर वर्ग और हर उम्र के लोग एक साथ खड़े होते हैं। आज, जब यह अभियान रजत जयंती की दहलीज पर खड़ा है, तो यह इंदौर के लिए गर्व का क्षण है। यह इस बात का प्रमाण है कि अपन इंदौर केवल विकास का शहर नहीं, बल्कि संस्कारों और नागरिक चेतना का शहर है।

शायद इसी कारण जब प्रदेश में कहीं राष्ट्रीय पर्वों की बात होती है, तो इंदौर अपने आगे उदाहरण बनकर सामने आता है। बिना शोर किए, बिना दिखावे के, चुपचाप लेकिन पूरे गर्व के साथ-झंडा ऊँचा थामे हुए।

तस्करी की दुनिया पर एक विश्वसनीय वेब सीरीज



वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

भा चौदह जनवरी, मकर संक्रान्ति को इमरान हाशमी और शरद केलकर अभिनीत नई वेब सीरीज - 'तस्करी- द स्मगलर्स' रिलीज हो गई। ओयह एक सात एपीसोड का क्राइम ड्रामा है। इसे नीरज पाण्डे ने 'फ्राइडे स्टोरी टेलर्स' के बैनर पर बनाया है। यह स्मगलिंग की उस दुनिया को दिखाती है, जो आम लोगों की नजरों से छुपी रहती है। कहानी कई देशों

कहानी में बाबा चौधरी नाम के एक बड़े तस्कर है। वह इस पूरे नेटवर्क को चुपचाप चलाते हैं। वह खुलकर सामने नहीं आते हैं लेकिन उनके फैसले पूरे धंधे को चलाते हैं। जब कस्टम्स टीम उसकी कमाई को नुकसान पहुँचाने लगती है, तब हालात और मुश्किल हो जाते हैं। इस टकराव के दौरान अफसरों पर काम का दबाव बढ़ता है। उनकी निजी जिन्दगी भी प्रभावित होने लगती है। तब तस्कर और कस्टम आफिसर सामने आते हैं।

इमरान हाशमी ने अर्जुन मीणा की भूमिका में संयमित और विश्वसनीय अभिनय किया है। वह शान्त रहते हुए भी अभिनीत चरित्र का असर दिखाते हैं। शरद केलकर बाबा चौधरी को भूमिका में बिना ज्यादा शोर शान्त लेकिन खतरनाक लगते हैं। सिरिज में मिताली कामत (अमृता खानविलकर) और रविंदर गुज्जर (नंदीश सिंह



से जुड़ी हुई है जो यह बताती है कि तस्करी सिर्फ एक जगह तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका एक अंतरराष्ट्रीय संजाल? होता है। महँगी घड़ियाँ, ब्रांडेड बैग, सोना, विदेशी करंसी और नशीले पदार्थ एयरपोर्ट के रास्ते कैसे एक देश से दूसरे देश पहुँचाए जाते हैं, उसके दृष्यांकन के साथ सिरिज की शुरुआत होती है। साथ ही यह भी बताया जाता है कैस स्मगलर कानून, कस्टम ड्यूटी और सुरक्षा व्यवस्था की कमियों का फायदा उठाते हैं।

कहानी मूलतः मुम्बई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट से शुरू होती है। यहाँ कस्टम्स विभाग की एक टीम इन गैरकानूनी कामों को रोकने की कोशिश करती है, इस टीम का प्रमुख है- अर्जुन मीणा (इमरान हाशमी) जो एक ईमानदार और मेहनती कस्टम्स अधिकारी है। वह नियमों से कोई समझौता नहीं करता। वह पूरे मन से अपना काम करता है। लेकिन जांच के दौरान उसे बार-बार यह एहसास होता है कि तस्कर बहुत चालाक हैं। वे हमेशा कानून से एक कदम आगे रहते हैं। फर्जी कागजात, गुप्त कोड और सिस्टम के अंदर मौजूद लोगों की मदद से वे खुद को बचा लेते हैं।

तस्कर की भूमिका में रद केलकर है जो

संघ) जैसे चरित्र भी अहम भूमिका निभाते हैं। ये चरित्र जाँच और ऑपरेशन के दौरान कहानी को आगे बढ़ाते हैं। इनके अलावा फ्रेडी दारूवाला, जमील खान और अन्य कलाकारों ने भी अपने-अपने चरित्रों को मजबूती दी है।

सिरिज का निर्देशन नीरज पाण्डे और राघव एम जैरथ ने मिलकर किया है, जिसकी वजह से कहानी का टोन गंभीर और संतुलित बना रहता है। सिरिज में जरूरत से ज्यादा एक्शन या ड्रामा नहीं दिखाया गया है। जाँच की प्रक्रिया को धीरे और साफ तरीके से पेश किया गया है। कुछ एपीसोड थोड़े धीमे जरूर लग सकते हैं। इसके बावजूद कहानी ज्यादा असली और भरोसेमंद महसूस होती है। जाँच से जुड़े कुछ सीन एक जैसे लगते हैं, जिससे दोहराव महसूस होता है। इसी वजह से कुछ ऑडियंस को सिरिज खींची हुई लग सकती है, खासकर उन्हें जो तेज रफ्तार थ्रिलर पसंद करते हैं। कुल मिलाकर यह सिरिज एक गंभीर और वास्तविक क्राइम सिरिज है। इसमें बहुत बड़े टिविस्ट नहीं हैं। इसके बावजूद कहानी, माहौल और अभिनय इसे देखने लायक बनाते हैं। अगर आपको सच्चाई के करीब रहने वाली, धीमी और समझदारी से बनी क्राइम कहानियाँ पसंद हैं, तो यह सिरिज आपको पसन्द आ सकती है।

नीमच में जीबीएस बीमारी से 2 बच्चों की मौत

● 15 नाबालिग संक्रमित, भोपाल और उज्जैन पहुंचे विशेषज्ञ, डिप्टी सीएम ने किया मनासा का दौरा



नीमच (नप्र) नीमच जिले के मनासा कस्बे में गुलियन-बेरी सिंड्रोम (जीबीएस) का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। अब तक इस बीमारी से दो बच्चों की मौत हो चुकी है, जबकि 17 लोग संक्रमित हैं। इनमें से 15 मरीज

उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने घर-घर सर्वे और स्क्रीनिंग के निर्देश

नाबालिग हैं, जिससे स्थिति और अधिक गंभीर हो गई है। शुक्रवार रात चार नए मामले सामने आने के बाद कुल संक्रमितों की संख्या 13 से बढ़कर 17 हो गई। संक्रमितों में 4 से 17 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों और किशोरों की संख्या सबसे अधिक है। केवल दो वयस्क मरीज ही इस बीमारी

की चपेट में आए हैं। बच्चों में तेजी से फैल रहे संक्रमण को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड पर है।

बीमारी के कारण और स्रोत पता कर रहे

इससे पहले शुक्रवार को उज्जैन सभागायुक्त ने भी प्रभावित क्षेत्र का दौरा कर मरीजों और उनके परिजनों से बातचीत की थी। फिलहाल भोपाल और उज्जैन से आई विशेषज्ञों की टीम मनासा में डेरा डाले हुए है। ये टीम लगातार जांच, स्क्रीनिंग और सैपल कलेक्शन कर बीमारी के कारणों और स्रोत का पता लगाने में जुटी है।

ट्रेनी कॉन्स्टेबल को डंपर ने कुचला, मौके पर मौत

बड़वाह (नप्र) इंदौर से ओंकारेश्वर जा रहे भाई-बहन की बाइक को तेज रफ्तार डंपर ने टक्कर मार दी। हादसे में पीछे बैठी बहन के सिर के ऊपर से डंपर का पहिया गुजर गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वही बाइक चला रहा भाई बाल-बाल बच गया। हादसा शनिवार दोपहर करीब 1 बजे इंदौर-इच्छापुर हाईवे पर बड़वाह के पास हुआ। मृतका की



पहचान त्रिा राजौरिया (24) के रूप में हुई है। वह इंदौर में पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में कॉन्स्टेबल की ट्रेनिंग ले रही थी। बाइक चला रहा उसका भाई आशु राजौरिया इंदौर सेंट्रल जेल में पदस्थ डिप्टी जेलर है। दोनों मूल रूप से ग्वालियर के निवासी बताए जा रहे हैं।

दो छात्राएं फांसी के फंदे पर लटकती मिलीं

परिजन का आरोप- छेड़खानी से परेशान होकर उठाया कदम, दूसरी ने पिता की डांट से डरी

जबलपुर (नप्र) जबलपुर के बरेला क्षेत्र में रहने वाली दो नाबालिग छात्राएं घर में फांसी के फंदे पर लटकती मिलीं। दोनों ही छात्राएं एक ही स्कूल में पढ़ती थीं। एक छात्रा के परिजन का आरोप है कि उनकी बेटी ने एक युवक की छेड़छाड़ से परेशान होकर यह कदम उठाया है। तो दूसरी ने पिता की डांट से नाराज होकर ऐसा किया। घटना की जानकारी लगते ही बरेला थाना पुलिस मौके पर पहुंची और पंचनामा कार्रवाई कर पीएम के लिए मेडिकल भेजा। इधर, छात्रा के परिजनों ने नाराज होकर बरेला थाने का घेराव कर दिया। छात्रा के परिजनों का कहना है कि दूसरे गांव का एक युवक उसे लगातार परेशान कर रहा था, जिसके कारण उसने आत्महत्या कर ली। 15 वर्षीय छात्रा को गाइडरखेड़ा गांव में रहने वाला प्रिंस टाकुर दो माह से परेशान कर रहा था। परिजनों ने पुलिस को बताया कि जब छात्रा स्कूल जाती तो वह रास्ते में रोककर बाइक में बैठने को कहता था। फोन कर परेशान करते हुए मिलने को बोलता था। छात्रा ने प्रिंस की शिकायत अपने पिता से की तो उन्होंने गाइडरखेड़ा जाकर आरोपी के पिता से शिकायत की, जिस पर आश्वासन दिया गया कि दोबारा यह गलती नहीं होगी। शुक्रवार की शाम को छात्रा स्कूल से लौटकर आने के बाद गुमसुम थी। खाना खाने के बाद वह अपने कमरे में चली गई। देर रात जब छात्रा के मां ने दरवाजा खटखटाया तो अंदर से कोई आवाज नहीं आई। फौरन छात्रा के पिता और भाई को जगाया, काफी देर तक दरवाजा खटखटाया। आवाज सुनकर आसपास के लोग आ गए। ग्रामीणों ने दरवाजा तोड़ा तो देखा कि छात्रा फांसी पर लटकती हुई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। छात्रा ने फांसी लगाई, 500 रुपए निकाले थे- बरेला थाना के वार्ड 9 में रहने वाली 15 वर्षीय छात्रा ने भी आत्महत्या कर ली। पुलिस की पुछताछ में परिवार वालों ने बताया कि शुक्रवार को छात्रा ने मां के पास रखे 500 रुपए निकाल लिए थे, जिसकी जानकारी शाम को पिता को लगी तो उन्होंने छात्रा को डांट लगाते हुए दोबारा इस तरह की गलती ना करने को कहा। पिता की डांट के बाद छात्रा चुप रही। देर रात को उसने फांसी लगा ली।

गणतंत्र दिवस परेड के चलते दिल्ली एयरस्पेस प्रतिबंध

भोपाल (नप्र) नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड और उसकी रिहर्सल के चलते 19 से 26 जनवरी के बीच दिल्ली एयरस्पेस में प्रतिबंध लागू रहेगा। इन प्रतिबंधों का असर दिल्ली एयरपोर्ट से आने-जाने वाली उड़ानों पर पड़ेगा। इसी कारण भोपाल-दिल्ली-भोपाल रूट की कुछ नियमित फ्लाइट्स को रद्द किया गया है, जिससे यात्रियों को असुविधा हो सकती है। इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट नंबर 6थ-6364/6365 (दिल्ली-भोपाल-दिल्ली), जिसका निर्धारित समय दोपहर 1:15/1:45 है, 19 से 26 जनवरी 2026 तक रद्द रहेगी। इसी तरह एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-1723/1894 (दिल्ली-भोपाल-दिल्ली), जिसका निर्धारित समय 12:05/12:35 है, 21 से 26 जनवरी 2026 तक संचालित नहीं की जाएगी।



उत्साह - उमंग और उमड़े सैलाब से धारा नगरी की अलौकिक छटा

भोजशाला में सर्व हिंदू समाज द्वारा अखंड पूजा संकल्प के समर्थन में आह्वान वाहन रैली में दिखी भव्यता

(राजेश शर्मा)

धार। राजा भोज की धारा नगरी अपनी समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के लिए देश और दुनिया में जानी जाती है। शिक्षा - संस्कृति

धार शहर भगवामय हो गया हो। हिंदू समाज ने बहू-चंद्रकर यात्रा का स्वागत किया। मातृशक्ति और युवाओं ने सरस्वती माता एवं जय श्रीराम की गूंज से गुंजायमान हो उठा था आकाश।

एवं अनुशासित आह्वान रैली का आयोजन किया गया। वाहन रैली में सकल हिंदू समाज एवं भोज उत्सव आयोजन समिति के नेतृत्व में हजारों की संख्या में सनातन प्रेमी हिंदू जनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता

मंदिर भोजशाला की मुक्ति एवं उसके गौरव की पूर्ण स्थापना के लिए सभी हिंदू परिवार भोजशाला बसंत पंचमी को अखण्ड पूजा अर्चना के लिए अवश्य पधारे। स्वामी जी ने हिंदू समाज को संकल्प दिलाया



की इस वैभवशाली नगरी में 17 जनवरी को उमड़े सैलाब ने एक बार फिर इस ऐतिहासिक नगरी के इतिहास को मानों जीवंत कर दिया। अवसर था भोजशाला में सर्व हिंदू समाज द्वारा अखंड पूजा संकल्प के समर्थन में आह्वान वाहन रैली का। भव्य वाहन रैली में उत्सव और उल्लास के रंग में धार की धरा की छटा मनमोहक दिखाई दे रही थी। संपूर्ण शहर में खासा उत्साह देखने को मिला मानों आज

इस दौरान हिंदू समाज में भोजशाला में अखंड पूजा को लेकर भारी उत्साह देखा गया। युवाओं और मातृशक्तियों का उत्साह देखते ही बनता था।

महाराज भोज स्मृति बसंतोत्सव समिति एवं सर्व हिंदू समाज के आह्वान पर बसंत पंचमी के अवसर पर भोजशाला में मां वाग्देवी की पूजा अर्चना आरती पूरे दिन हिंदू समाज निर्विघ्न संपन्न कर सके इसके लिए धार शहर में 17 जनवरी को एक विशाल वाहन

की ब्राहन रैली का श्रीगणेश श्रीफल फोड़ कर महामंत्री सुमित चौधरी ने किया। (आह्वान) वाहन रैली के संयोजक अनुराग भाटी, कार्यक्रम का संचालन निखिल जोशी ने किया।

वाहन रैली को संबोधित करते हुए महंत हरिहरानंद महाराज ने कहा कि धर्म युद्ध की बेला आई धर्म जागरण से धरती गूंजे अंतिम विजय सत्य की होगी भोजशाला में सरस्वती पूजे। मां सरस्वती

कि भोजशाला में मां वाग्देवी की प्रतिमा स्थापना तक लगातार धर्म जागरण और अनुष्ठान करना है। समिति के मीडिया प्रमुख मोहन राठी ने बताया कि रैली पीजी कॉलेज ग्राउंड से आरंभ होकर त्रिमूर्ति, टीवीएस, महाजन रोड, भोज हॉस्पिटल, घोड़ा चौपाटी, झंडा चौपाटी गौगांव, हटवाड़ा, मोहन टॉकोज, पिंडरवाडी, धानमंडी, भाजी बाजार, बस स्टैंड, नालछा दरवाजा, पो चौपाटी, राजवाड़ा, आनंद चौपाटी, जवाहर मार्ग, धानमंडी, रघुनाथपुरा, हटवाड़ा, छतरी चौराहा, धारेश्वर मार्ग होते हुए अखंड ज्योति मंदिर पर समापन

किया गया। भोज उत्सव समिति के सभी पदाधिकारी ने हिंदू समाज का आभार माना एवं भोजशाला 23 जनवरी बसंत पंचमी को अधिक से अधिक संख्या में पधारने का संकल्प याद दिलाया। स्वामी जी का शाल, श्रीफल एवं फूलमालाओं से समिति के पदाधिकारियों समिति अध्यक्ष सुरेश चंद्र जलोदिया, महामंत्री सुमित चौधरी, संरक्षक अशोक जैन, महाप्रबंधक हेमंत दौराया, निखिल जोशी ने स्वागत किया।

भारत विरोधी तत्वों से बचें, तथा उनका विरोध करें

जिला आरएसएस कार्यवाह संजू सिलावट

सोहागपुर। नगर में हिंदू सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें सकल हिंदू समाज से हजारों नागरिक कर्तव्य भाव के साथ उपस्थित हुए। सोहागपुर शहर में केशव बस्ती का हिंदू सम्मेलन नगर परिषद के मंगल भवन परिसर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर शंकर विवेकानंद आश्रम ईशरपुर संचालक स्वामी ईशानानंद सरस्वती ने सामाजिक समरसता पर अपनी बात रखी। आरएसएस जिला कार्यवाह संजू सिलावट ने हिंदू जागरण का आह्वान कर स्वदेशी अपनाने की बात कही। उन्होंने भारत विरोधी तत्वों से बचने और उनका विरोध करने का आह्वान किया। डॉ. राजकुमार शास्त्री गायत्री साधन केंद्र माखन नगर ने यज्ञ व गायत्री माता का पूजन कराया। पिपरिया से आई ब्रह्मकुमारी दीदी बीके शैलम ने अख्यात्मक के प्रकाश से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने की बात कही। इसके पूर्व भव्य कलश यात्रा देनवा कॉलोनी स्थित श्री गणेश मंदिर से निकाली गई। भगवा ध्वज के साथ निकाली गई कलश यात्रा नप मंगल भवन पहुंची। यहां हिंदुओं ने यात्रा



का पुष्प वर्षाकर अभिनंदन किया। इसके उपरांत गायत्री परिवार ने हवन आयोजन किया। प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विवि द्वारा सज्जित चैतन्य नै देवियों व भारत माता की झांकी का अवलोकन हिंदुओं ने किया। इस दौरान जनपद पंचायत अध्यक्ष जालम सिंह पटेल, सेवानिवृत्त उपयंत्री रामभरोसे सूर्यवंशी,

जप उपाध्यक्ष राघवेंद्र रघुवंशी, समाजसेवी कृष्णा पालीवाल, रामगोपाल चौबे, अभय खंडेलवाल, सृष्टि मोहन गुप्ता, जीवन दुबे, शिवकुमार पटेल, विशाल गोलानी, भरत तिवारी व सैकड़ों नागरिक उपस्थित थे। अंत में भारत माता की आरती उपरांत भंडारे का आयोजन किया गया।

भोपाल के रहमान डकैत को कोर्ट में पेश किया

कुख्यात राजू की रिमांड खत्म, नेकबैंड पहने सिर झुकाए कोर्ट पहुंचा, हेकड़ी गायब

भोपाल (नप्र) भोपाल के कुख्यात राजू ईरानी उर्फ रहमान डकैत को 6 दिन की पुलिस रिमांड के बाद आज कोर्ट में पेश कर दिया गया। हालांकि पुलिस राजू से कोई खास जानकारी हासिल नहीं कर सकी। हिरासत के दौरान राजू लगातार बीमारी की हवाला देकर पुछताछ से बचता रहा। पुलिस ने उससे डोजियर भरवा लिया है। जिसमें उसके तमाम करीबी रिश्तेदारों और गुणों की जानकारी दर्ज की गई है। जाहिरा कारोबार के तौर पर राजू ने स्वयं को प्रॉपर्टी डीलर और प्लाइवुड कारोबारी बताया है। गुजरात पुलिस ने प्रोडक्शन वारंट पर सौंपा था- भोपाल की निशातपुरा पुलिस कुख्यात राजू ईरानी को 11 जनवरी को प्रोडक्शन वारंट पर सूरत थ्रसे भोपाल ले आई थी। यहां उसकी चार मामलों में गिरफ्तारी की गई। इसी दिन राजू को भोपाल की जिला कोर्ट में पेश किया जहां से उसे 17 जनवरी तक रिमांड पर भेज दिया। कोर्ट से रिमांड मंजूर होने के बाद भी राजू हंसात हुआ नजर आया। कोर्ट रूम से निकलने के बाद राजू ने कहा कि जल्द छूट जाऊंगा। हालांकि, पुलिस ने उससे पुछताछ शुरू कर दी है। इन चार मामलों में वह 2017 से लगातार फरार चल रहा था।



महाभारत समागम

श्रीलंका और मणिपुरी शैली में महाभारत का मंचन

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित सभ्यताओं के संघर्ष एवं औदार्य की महागाथा पर केंद्रित महाभारत समागम के दूसरे दिन श्रीलंका और पर्वीतर राज्य मणिपुर के कलाकारों ने अपनी अपनी शैलियों में महाभारत के प्रसंग को नृत्य-नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से प्रस्तुत किया। बहिरंग के मंच पर अरियारवे के कालराचि निर्देशित एके फोक आर्ट रिसर्च सेंटर कोलंबो, श्रीलंका द्वारा सगीत नाट्य प्रस्तुति पांचाली की प्रस्तुति दी गयी। इसके पहले पूर्वरंग में कल्याण कृष्ण नायर द्वारा निर्देशित कथकली नृत्य शैली में दु.शासन वध, मणिपुर से आये टिकेन सिंह निर्देशित नृत्य नाट्य उर्वशी तथा दिल्ली के हिमांशु श्रीवास्तव के निर्देशन में तैयार हुई शिखंडी का मंचन किया गया। कार्यक्रम के पूर्व वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी द्वारा कलाकारों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। बहिरंग मंच पर सगीत-नाट्य प्रस्तुति पांचाली के अंतर्गत महाभारत का एक महत्वपूर्ण और भावनात्मक प्रसंग मंचित किया गया। कथा की शुरुआत बदरिकाश्रम के शांत और रमणीय वातावरण से होती है, जहाँ पांडवों की महारानी द्रौपदी प्रकृति की सुंदरता का आनंद ले रही हैं। तभी एक अद्भुत पुष्प उनके पास बहकर आता है। उस फूल को देखकर द्रौपदी और अधिक पुष्प पाने की इच्छा प्रकट करती हैं और इस कार्य के लिए भीम को भेजती हैं। द्रौपदी की इच्छा पूरी करने निकले भीम वने वन में प्रवेश करते हैं, जहाँ उनके भारी कदमों से भगवान हनुमान की निद्रा भंग हो जाती है। हनुमान पहले भीम का मार्ग रोकते हैं और अपनी अपार शक्ति का परिचय देते हैं। बार-बार प्रयास के बावजूद जब भीम अस्फल होते हैं, तब वे हनुमान की महानता स्वीकार करते हैं। इसके



बाद हनुमान स्वयं को भीम का भाई बताते हैं और भविष्य में अर्जुन के रथ पर विराजमान होकर उनका साथ देने का वचन देते हैं। यह दृश्य दर्शकों के लिए अत्यंत भावुक और प्रेरणादायक रहा। यह प्रसंग वीरता, दिव्य मार्गदर्शन, प्रकृति के सम्मान, पारिवारिक एकता और पांडवों की भावी युद्ध एवं आध्यात्मिक तैयारी को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। निर्देशक हिमांशु श्रीवास्तव के निर्देशन में अंतरंग मंच पर नाट्य प्रस्तुति शिखंडी का सशक्त मंचन किया गया। यह नाटक महाभारत के उस पात्र पर केंद्रित है, जिसे लंबे समय तक समाज और इतिहास ने हाशिये पर रखा। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में खड़ा शिखंडी केवल युद्ध नहीं, बल्कि अपनी पहचान और स्वीकृति की आंतरिक लड़ाई भी लड़ता है।



दुनिया में धाक जमाने वाली हिंदी फ़िल्में

भारतीय सिनेमा ने पिछले एक दशक में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान पूरी तरह बदल ली। अब भारतीय फिल्मों केवल घरेलू बॉक्स ऑफिस तक सीमित नहीं हैं, बल्कि चीन, अमेरिका और खाड़ी देशों में भी रिकॉर्ड तोड़ कमाई कर रही हैं। इन फिल्मों की सफलता यह दर्शाती है कि भारतीय सिनेमा अब तकनीकी और कहानी के मामले में वैश्विक स्तर पर हॉलीवुड को टक्कर दे रहा है।

3 न टॉप 10 फिल्मों की सूची, जिन्होंने वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर 'तूफानी' कमाई की।



दंगल (2016): आमिर खान स्टार 'दंगल' भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म है। दिलचस्प बात यह है कि इस फिल्म ने भारत से कहीं ज्यादा कमाई चीन में की। नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड 2,024 करोड़ का कारोबार किया, जिसमें से लगभग 1,300 करोड़ अकेले चीन से आए थे।

बाहुबली 2: द कन्क्लूजन् (2017) : एसएस राजामौली की इस फिल्म ने भारतीय सिनेमा के लिए '1000 करोड़ क्लब' की शुरुआत की थी। 'कटप्पा ने बाहुबली को क्यों मारा?' के सस्पेंस ने इस फिल्म को दुनियाभर में 1,810 करोड़ की कमाई तक पहुंचाया। यह आज भी भारत की सबसे सफल फिल्मों में से एक है।

आरआरआर (2017) : एक बार फिर राजामौली ने 'आरआरआर' के जरिए वैश्विक

पटल पर तहलका मचाया। जूनियर एनटीआर और रामचरण की इस फिल्म ने न केवल 1,387 करोड़ कमाई, बल्कि इसके गाने 'नाटू नाटू' ने ऑस्कर जीतकर इतिहास रच दिया। जापान में इस फिल्म को जो प्यार मिला, वह अभूतपूर्व था।

केजीएफ चैप्टर-2 (2022) : कन्नड़ सुपरस्टार यश की 'केजीएफ-2' ने बॉक्स ऑफिस पर सुनामी ला दी थी। प्रशांत नील के निर्देशन में बनी इस फिल्म ने दुनिया भर में 1,250 करोड़ का कलेक्शन किया। इस फिल्म ने साबित कर दिया कि वेतरीन कटेंट वाली क्षेत्रीय फिल्मों में ग्लोबल स्तर पर राज कर सकती हैं।

कल्कि 2898 एडी (2024) : प्रभास, अमिताभ बच्चन और दीपिका पादुकोण स्टार इस साइंस-फिक्शन फिल्म ने विजुअल इफेक्ट्स के नए मानक स्थापित किए। भविष्यवादी कहानी और पौराणिक कथाओं के मेल ने इसे वैश्विक स्तर पर 1,100 करोड़ से अधिक की कमाई करने में मदद की।

जवान (2023) : शाहरुख खान के लिए साल 2023 'करियर-डिफाइनिंग' रहा। एटली के निर्देशन में बनी 'जवान' ने अपनी मास अपील और सामाजिक संदेश के दम पर वर्ल्डवाइड 1,148 करोड़ का शानदार बिजनेस किया।

पठान (2023) : शाहरुख खान की चार साल बाद वापसी इसी फिल्म से हुई थी। 'पठान' ने रिलीज होते ही रिकॉर्ड्स की झड़ी

लगा दी और दुनियाभर में 1,050 करोड़ की कमाई के साथ बॉलीवुड का सूखा खत्म किया।

एनिमल (2023) : रणबीर कपूर और संदीप रेड्डी वांग्वा की इस फिल्म ने काफी विवादों के बावजूद बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त प्रदर्शन किया। फिल्म ने अपनी डार्क थीम और संगीत के दम पर वर्ल्डवाइड 915 करोड़ का कलेक्शन किया।



बजरंगी भाईजान (2015) : सलमान खान की यह फिल्म अपनी इमोशनल कहानी के कारण भारत और चीन दोनों जगह बेहद सफल रही। इसने वैश्विक स्तर पर 7918 करोड़ की कमाई की, जिसमें चीन का बड़ा योगदान था।

सिक्रेट सुपरस्टार (2017) : यह सूची की सबसे चौकाने वाली फिल्म हो सकती है। आमिर खान और जायरा वसीम की इस छोटी बजट की फिल्म ने चीन में अपनी लोकप्रियता के कारण वर्ल्डवाइड 900 करोड़ से अधिक की कमाई की थी।

ये 7 बड़ी फिल्मों धमाका करेंगी

जो दर्शक शिकायत करते हैं कि हमारे पास ज्यादा अच्छी भारतीय रिलीज नहीं हैं, तो उन्हें पता होना चाहिए कि 2026 से 2027 के बीच 7 सबसे बड़ी फिल्मों रिलीज होंगी। इनमें रणबीर कपूर की 'रामायण' पार्ट-1 जहां 2026 में आएगी तो इसका दूसरा पार्ट 2027 में रिलीज किया जाएगा। शाहरुख खान के बर्थडे पर हाल ही में सुपरस्टार की अपकमिंग फिल्म 'किंग' की पहली झलक रिलीज की गई थी। इसे देखने के बाद फैंस इस फिल्म की रिलीज को लेकर सुपर एक्साइटड हैं। 'किंग' में शाहरुख खान के साथ पहली बार उनकी बेटी सुहाना खान भी स्क्रीन शेयर करती नजर आएगी। फिल्म के अन्य कलाकारों में अभिषेक बच्चन और दीपिका पादुकोण हैं। ये फिल्म भी मच अवेटेड है और ये 2026 में रिलीज होगी। 'वारणसी' का टीजर भी रिलीज किया गया, जिसमें महेश बाबू रूद्र के रूप में अपने पहले लुक



में बैल की सवारी करते नजर आए, जिसे भगवान शिव का अवतार माना जाता है। इस फिल्म के निर्माता एसएस राजामौली हैं। इस अपकमिंग बड़ी फिल्म में प्रियंका चोपड़ा ने मंदकिनी का किरदार निभाया है और पृथ्वीराज सुकुमारन कुंभा के किरदार में हैं। ये फिल्म साल 2027 में रिलीज होगी। अन्य बड़ी रिलीज फिल्मों में वहीं ड्रैगन (जूनियर एनटीआर-प्रशांत नील के साथ टेंटेटिव टाइटल) 2026 में रिलीज होगी। वहीं यश की 'टॉक्सिक : अफेयरी टेल प्रॉन प्रॉन-अप्स' भी 2026 में ही सिनेमाघरों में दस्तक देगी। इसके अलावा प्रभास की 'स्पिरिट' भी अगले साल यानी 2026 में ही बड़े पर्दे पर रिलीज होगी। एटली, अल्लू अर्जुन और दीपिका पादुकोण स्टार एए22एक्सए6 भी सबसे बड़ी फिल्मों में से एक है। ये फिल्म भी 2026 में बड़े पर्दे पर आएगी। इन सब फिल्मों की लेकर फैंस में अभी से बेहद एक्साइटमेंट है।

रियल बॉक्स जो नफरत से भरा, वो दर्शकों का प्यारा



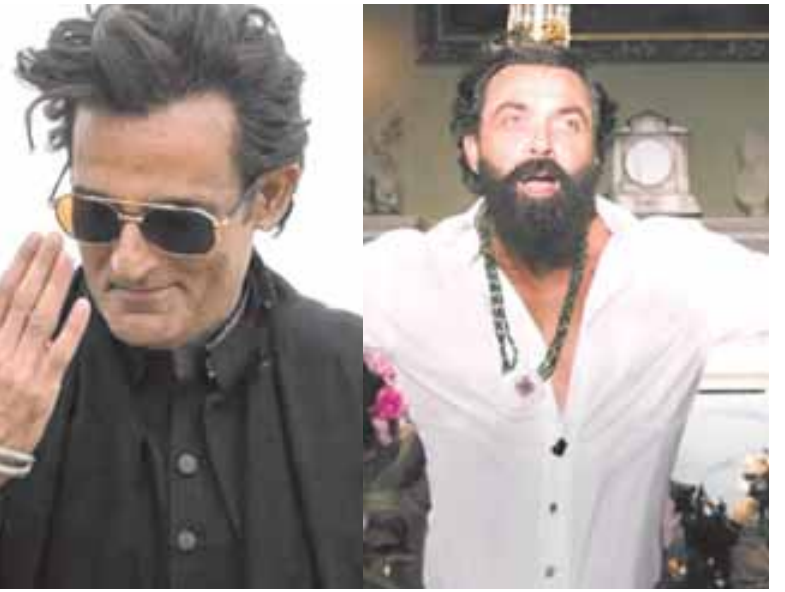
हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सुबहे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

लगी। 'छावा' में औरंगजेब की भूमिका के साथ उन्होंने इतिहास आधारित निगेटिव किरदार में भी परतें जोड़ते हुए दिखाया कि दर्शक खलनायक में भी वैचारिक और भावनात्मक जटिलता देखा चाहता है। रोमांटिक हीरो बाँबी देओल का 'विलेन युग' वेब सीरीज 'आश्रम' के बाबा निराला से शुरू होकर फिल्म 'एनिमल' के मूक, लेकिन हिंसक अबरार हक त आता है। इस किरदार ने उन्हें फिर से मुख्यधारा चर्चा में ला खड़ा किया। 'आश्रम' में उन्होंने तथाकथित धर्मगुरु के रूप में जिस तरह सत्ता, शोषण और करिश्मे का मेल दिखाया, उसने यह साबित किया कि निगेटिव रोल, स्टार की खोई हुई चमक फिर लौटा सकते हैं। 'एनिमल' में अबरार जैसे लगभग बिना

लगी। 'छावा' में औरंगजेब की भूमिका के साथ उन्होंने इतिहास आधारित निगेटिव किरदार में भी परतें जोड़ते हुए दिखाया कि दर्शक खलनायक में भी वैचारिक और भावनात्मक जटिलता देखा चाहता है। रोमांटिक हीरो बाँबी देओल का 'विलेन युग' वेब सीरीज 'आश्रम' के बाबा निराला से शुरू होकर फिल्म 'एनिमल' के मूक, लेकिन हिंसक अबरार हक त आता है। इस किरदार ने उन्हें फिर से मुख्यधारा चर्चा में ला खड़ा किया। 'आश्रम' में उन्होंने तथाकथित धर्मगुरु के रूप में जिस तरह सत्ता, शोषण और करिश्मे का मेल दिखाया, उसने यह साबित किया कि निगेटिव रोल, स्टार की खोई हुई चमक फिर लौटा सकते हैं। 'एनिमल' में अबरार जैसे लगभग बिना

गए और यही सिनेमा का विरोधाभास है। अजीत ने इस धारा को और स्टाइलिश बनाया। 1950-60 के दशक में उनकी छवि एक ऐसे 'गैंगस्टर जेंटलमैन' की बन गई, जिसकी बोली और चाल से ही डर बैठ जाए। उनके संवाद और रौबदार उपस्थिति ने साबित किया कि खलनायक भी 'क्लास' रख सकता है। अजीत की खलनायकी में ग्लैमर था। लेकिन, प्रेम चोपड़ा, रंजीत और गुलशन ग्रोवर की आंखों से अत्यंत टपकती थी, जो उनकी खलनायकी पहचान बनी।

इसी दौर में 1975 में 'शोले' आई और गब्बर सिंह ने यह साबित किया कि खलनायक भी नायक बन सकता है। अमजद खान का किरदार गब्बर बहुत प्रभावशाली था। उसकी खासियत थी 'संवाद



संवाद वाले किरदार में सिर्फ शरीर, आंखों और हिंसा की कोरियोग्राफी के जरिए प्रभाव छोड़ना, आधुनिक एक्शन-सिनेमा के सौंदर्यासूत्र के अनुरूप एक नया तरह का खलनायक गढ़ता है, जो स्टाइल और बरकरार दोनों से याद रहता है। इसके बाद उन्हें रेस-3, लव हॉस्टल और आगामी बड़े प्रोजेक्ट्स में कास्ट किया जाना दिखाता है कि इंडस्ट्री उन्हें नए दौर के विलेन के रूप में देख रही है। हिंदी सिनेमा के कथानक में 'नायक' हमेशा केंद्र में रहा है। वह पात्र जो अचछाई, त्याग और नैतिकता का प्रतीक होता है। लेकिन नायक की रोशनी तभी चमकती है, जब उसके सामने एक दमदार खलनायक हो। हर दौर में कुछ ऐसे कलाकार हुए, जिन्होंने यह साबित किया कि अभिनय की असली गहराई 'बुराई' को विश्वसनीय और करिश्माई बनाने में है। उनके किरदारों ने यह दिखाया कि दर्शक नफरत करते हुए भी ऐसे पात्रों को भूल नहीं पाते। 1930 और 40 के दशक का हिंदी सिनेमा अचछाई-बुराई की सीधी लड़ाइयों पर आधारित था। बाद में कुछ अभिनेताओं ने खलनायकी का चेहरा बदलना शुरू किया। इसकी शुरुआत केएन सिंह ने की। जब निगेटिव किरदार बल या हिंसा आधारित थे, तब उन्होंने सोचने-वाले अपराधी की छवि रची। केएन सिंह ने 'क़ेदी', 'जीवन नैया' और 'हवस' जैसी फिल्मों में संतुलित, ठंडा और परिकृत अंदाज दर्शाया। इसके बाद आया प्राण का दौर, जिन्होंने 1940 और 50 के दशक में खलनायक की परिभाषा ही बदल दी। 'परख', 'जहां आरा' और 'बड़ी बहन' जैसी फिल्मों में उनका अभिनय डरावना और सम्मोहक दोनों था। वे बुरे अवश्य थे, पर करिश्माई होंगे। उनके अंदाज, आवाज और चाल-ढाल में एक खलनायक चमक थी, जिसने खलनायकी को एक नई प्रतिष्ठा दी। प्राण जितना नफरत का पात्र बने, उतने ही दर्शकों के मन में गहराई से बस

में आतंक पैदा करना। गब्बर सिंह बने अमजद खान ने बाद में कई सकारात्मक भूमिकाएं निभाईं। हालांकि 'लावारिस', 'योगी' और 'धर्म कांटा' जैसी फिल्मों में वे खलनायक थे, लेकिन दर्शक उन्हें गब्बर के रूप में याद करते हैं। इस परंपरा को अमरीश पुरी ने भी खासी ऊंचाई दी। 'मिस्टर इंडिया' के मोर्गेबो से लेकर 'परदेस' या 'नायक' तक, उनके किरदार ताकत और भय का प्रतीक बने। उनकी गूंजती आवाज और सख्त उपस्थिति ने खलनायक को और दिया। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में उन्होंने वही रौब एक बदले हुए भाव में दिखाया, जहां बुराई के पीछे मानवीय भावनाएं थीं।

हर युग का खलनायक उस समय के समाज का भावात्मक आईना होता है। '50-60' में वह सत्ता और संपत्ति के भ्रष्ट प्रतीक थे। '70-80' में वह व्यवस्था-विरोधी आम आदमी का गुस्सा बन गया। 2000 के बाद उसने मानवीय अंतर्विरोधों का चेहरा धारण कर लिया। अभिनेता के लिए यह किरदार सबसे कठिन काम है। यही खलनायकी की कसौटी भी है। केएन सिंह की बौद्धिकता, प्राण की अदाओं का आतंक, अजीत की हिंसा आधारित थे, तब उन्होंने सोचने-वाले अपराधी की छवि रची। केएन सिंह ने 'क़ेदी', 'जीवन नैया' और 'हवस' जैसी फिल्मों में संतुलित, ठंडा और परिकृत अंदाज दर्शाया। इसके बाद आया प्राण का दौर, जिन्होंने 1940 और 50 के दशक में खलनायक की परिभाषा ही बदल दी। 'परख', 'जहां आरा' और 'बड़ी बहन' जैसी फिल्मों में उनका अभिनय डरावना और सम्मोहक दोनों था। वे बुरे अवश्य थे, पर करिश्माई होंगे। उनके अंदाज, आवाज और चाल-ढाल में एक खलनायक चमक थी, जिसने खलनायकी को एक नई प्रतिष्ठा दी। प्राण जितना नफरत का पात्र बने, उतने ही दर्शकों के मन में गहराई से बस

फिल्मी धागे की डोर कितनी मजबूत, कितनी कमजोर



अशोक जोशी

प्रेम का रिश्ता बहुत नाजुक होता है, इसे गुस्से या जल्दबाजी में कभी नहीं तोड़ना चाहिए। क्योंकि, यदि यह एक बार टूट जाए तो इसे दोबारा जोड़ना मुश्किल होता है और अगर जुड़ भी जाए तो उसमें गांठ पड़ जाती है, जिससे पहले जैसा प्रेम नहीं

ऐसी कोई फिल्में हैं जिनके शीर्षक में धागे या डोर का प्रयोग किया गया है। यह बात अलग है कि यह शीर्षक केवल नाम के ही होते हैं। मूल कहानी से उनका कोई लेना देना नहीं होता है। कई बार तो इसका अर्थ फिल्म की कहानी से उल्टा ही होता है। 1973 में राज खोसला ने एक फिल्म बनाई थी 'कच्चे धागे।' कबीर बेदी और विनोद खन्ना के अभिनय से सजी इस फिल्म में धागों का यह संबंध उतना कच्चा नहीं था जितनी मजबूत दोनों डकू बने पात्रों की दुश्मनी। फिल्म में कच्चे धागे का सिर्फ इतना ही लेना देना था कि फिल्म की नायिका मौसमी चटर्जी दोनों डकूओं को अलग अलग अपना भाई मानती है और इसी बहन के प्रेमी को मिलाने के लिए दोनों डकू नफरत की जंजीर को तोड़ कर एक साथ हो जाते हैं। बस इसके अलावा पूरी फिल्म में मारपीट और हिंसा ही दिखाई गई थी। इसके 26 बरस बाद उनके मिलन लुथरिया ने इसी शीर्षक से फिल्म बनाई थी। इसमें अजय देवगन, सैफ अली खान को सौतेला भाई और एक दूसरे का दुश्मन बताया गया है। इसमें बहन वाला कोई कच्चा धागा नहीं था। फिल्म की नायिकाओं में नम्रता शिरोडकर और मनीषा कोइराला ने साथ दिया था। इसमें अजय एक तस्कर की भूमिका में हैं, जो राजस्थान-पाकिस्तान की सीमा पर तस्करि करता है। फिल्म का फिल्मांकन राजस्थान के मरुस्थल क्षेत्रों और स्वित्जरलैंड में हुई है। इसमें कच्चे धागे वाली कोई फिल्मों कहानी तो नहीं थी। लेकिन पहली फिल्म कच्चे धागे और दूसरी फिल्म कच्चे धागे के निर्देशकों राज खोसला और मिलन लुथरिया के बीच कच्चे धागे जैसा संबंध था। मिलन लुथरिया को



राज खोसला का जैविक पुत्र माना जाता है जिसका जन्म कभी राज खोसला के सहायक रहे महेश भट्ट की बहन और राज खोसला के विवाहोत्तर संबंध के बाद हुआ था और अर्जुन लुथरिया ने मां बेटे को अपनाकर अपना नाम दिया था। इसी तरह 1974 में एक फिल्म आयी थी 'रेशम की डोरी' जिसमें इसमें रेशम की डोरी धर्मद और उनकी बहन बनी कुमुद छुगानी के बीच केवल एक गाने और कुछ दृश्यों तक ही बंधी रहीं। पूरी फिल्म में धर्मद सायरा बानो को प्रेम की डोरी से बांधते दिखाई दिए। इस लिहाज से फिल्म का नाम प्यार की डोरी भी होता तो कोई फर्क नहीं पड़ता। संयोग से यह फिल्म राज खोसला के गुरु रहे निर्माता निर्देशक गुरुदत्त के साथ कच्चे धागे से बंधे धागे भाई आंतराम ने बनाई थी। फिल्मी शीर्षकों के अलावा फिल्मी गानों में डोरी या धागे का प्रयोग देखने को मिलता है। लेकिन गीतकार यहां रेशम की डोरी या कच्चे बंधन को भी बहन तक ही सीमित नहीं मानते। वह तो प्रेमी और



प्रेमिकाओं को भी कच्चे धागे या रेशम की डोरी से बांधने में नहीं चूके हैं। मनोज कुमार और आशा पारेख की फिल्म साजन में आनंद बक्षी ने 'रेशम की डोरी' की तुकबंदी कहा जइयो निंदिया चुरा के चोरी चोरी से की है। जितेंद्र और नंदा की फिल्म धरती कहे पुकार में मजरूह सुल्तानपुरी ने नायक और नायिका को प्रेम की डोरी में बांधते हुए जो गीत थे हम तुम चोरी से बंधे इक डोरी से लिखा था, उसकी डोर से दर्शक इतने तीव्रता से बंधे थे कि देश के कई सिनेमाघरों में दर्शक रील को रिवाइंड करवाकर यह गाना बार बार सुनते रहे। इंदौर के अलका टॉकीज में तो यह आलम था कि कॉलेज के छात्र जबरन टॉकीज में घुसकर इस गाने को सुनकर ही दम लेते थे। देव आनंद और सचिन देव बर्मन को भी इस धागे और डोरी से बहुत ज्यादा लगाव था। उनकी फिल्म यह गुलिस्तां हमारा में एक गीत था गोरी गोरी गोरी रे किस लिए बुन रही डोरी रे। इसी के अंतरे में नायक कहता है कच्चे हैं तेरे ये रेशम के धागे तोड़कर कोई इसे कोई कैसे धागे। देव आनंद की अपनी फिल्म 'हरे राम हरे कृष्ण' में भी कांची रे कांची रे प्रीत मेरी सांची में गीतकार आनंद बक्षी ने डोरी और कच्चे धागे दोनों का प्रयोग कर लिखा है



तेरे हथों मेरी डोरी ऐसे कच्चे धागे से बंधा आया जैसे। देव आनंद की ही फिल्म 'प्रेम पुजारी' के गीत रंगीला रे तेरे मेरे सपने के गीत जीवन की चित्रण करते हुए लिखा है पलकों के झूले से सपनों की डोरी प्यार ने बांधी जो तूने वो तोड़ी। देव आनंद नीरज और सचिन देव बर्मन की इसी तिकड़ी ने तेरे मेरे सपने के गीत जीवन की बगिया महेकगी के एक अंतरे में इसी कच्चे धागे का प्रयोग कर लिखा है हम और बंधेंगे, हम तुम कुछ और बंधेंगे, होगा कोई बीच, तो हम तुम और बंधेंगे बांधेगा धागा कच्चा, हम तुम तब और बंधेंगे। 'ललकार' के गीत या लो मुस्कुरा लो जीवन की डोर बड़ी कमजोर लिखा गया है तो 'सती सावित्री' की नायिका अपने पति से दाम्पत्य गांठ का उल्लेख करती हुई गाती है जीवन डोर तुम्ही संग बांधी क्या तोड़ो इस बंधन को जग के तूफान आंधी। किसी फिल्म में नायक और नायिका को टेलीफोन की डोर के साथ जुड़ा दिखाया गया है तो कहीं छत पर नायिका के साथ प्रेम पतंग उड़ते दिखाया गया है। फिल्मी गीतों की यह छत्र बहुत लम्बी है। लेकिन, जिस तरह से पतंग की डेंजर चायनीज डोर जीवन डोर को काटने के लिए कुख्यात हुई है। बहुत संभव है उससे कोई फिल्माकार प्रेरणा लेकर किसी खलनायक को प्रेमी-प्रेमिका की प्रेम की डोर को काटने या थ्रिलर फिल्म में किसी मंत्री या नेता या व्यापारी को मारने के लिए चाइनीज डोर के प्रयोग को फिल्माने का दाव आसमाए। इसे आतंकवादी हकतों से जोड़कर भी फिल्मांकित किए जाने की संभावना कम नहीं है।



बदलती वैश्विक व्यवस्था का खतरनाक संकेत



डॉनरो सिद्धांत

ममता कुशवाहा

लेखक शिक्षक हैं।

जिसे आज 'डॉनरो सिद्धांत' कहा जा रहा है, उसका उदय इक्कीसवीं सदी में अमेरिकी शक्ति की प्रकृति और उसकी अभिव्यक्ति में एक गहरे बदलाव का संकेत देता है। उन्नीसवीं सदी के मुनरो सिद्धांत और डोनाल्ड ट्रंप से जुड़ी समकालीन विश्वदृष्टि के संयोग से जन्मा यह सिद्धांत केवल प्रभाव जमाने तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्यक्ष संरक्षकत्व (गार्जियनशिप) की खुली घोषणा करता है। यह ऐसे विश्व की तस्वीर पेश करता है जहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका न केवल उन क्षेत्रों में हस्तक्षेप करने का अधिकार अपने पास मानता है जिन्हें वह रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण समझता है, बल्कि वहाँ की राजनीतिक प्रक्रियाओं, सत्ता परिवर्तन और शासन व्यवस्था की निगरानी को भी अपना वैध दायित्व मानने लगता है। इस संदर्भ में वेनेजुएला मात्र एक लैटिन अमेरिकी संकट नहीं रह जाता, बल्कि वह मंच बन जाता है जहाँ अमेरिकी शक्ति का यह नया और असहज स्वरूप अभ्यास में लाया जा रहा है।

अपने मूल में, डॉनरो सिद्धांत प्रभाव क्षेत्रों (स्फीयर ऑफ़ इन्फ्लुएंस) की अवधारणा को पुनर्जीवित करता है, विशेषकर पश्चिमी गोलार्ध को एक विशिष्ट रणनीतिक क्षेत्र के रूप में स्थापित करते हुए। अंतर यह है कि पहले ऐसे दावे अक्सर कूटनीतिक भाषा और नैतिक तर्कों में लिपटे रहते थे, जबकि आज उनकी अभिव्यक्ति कहीं अधिक प्रत्यक्ष और स्पष्ट है। इन क्षेत्रों में सक्रिय बाहरी शक्तियों को वैध हितधारक के रूप में नहीं, बल्कि घुसपैठियों के रूप में चित्रित किया जाता है। स्थानीय राजनीतिक घटनाक्रमों को अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के चरम से देखा जाने लगता है। इस प्रकार घरेलू शासन और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है और हस्तक्षेप को दबाव या प्रभुत्व के रूप में नहीं, बल्कि आत्मरक्षा की अनिवार्यता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस सिद्धांत की एक प्रमुख विशेषता उन मुद्दों का 'सुरक्षाकरण' है, जिन्हें पहले सामाजिक, आर्थिक या विकासात्मक समस्याओं के रूप में देखा जाता था। प्रवासन, मादक पदार्थों की तस्करी, संगठित अपराध और ऊर्जा अस्थिरता अब सहयोग और साझा समाधान की माँग करने वाले अंतरराष्ट्रीय प्रश्न नहीं रह जाते, बल्कि उन्हें सीधे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अस्तित्वगत खतरे के रूप में परिभाषित किया जाता है। जब किसी समस्या को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है, तो बल प्रयोग, प्रतिबंध और दबाव जैसे कठोर साधनों का उपयोग न केवल आसान हो जाता है, बल्कि उन पर सवाल उठाना भी कठिन हो जाता है। सीमाएँ केवल भौगोलिक रूप से नहीं, बल्कि वैचारिक रूप से भी धुंधली हो जाती हैं और किसी अन्य देश की आंतरिक अस्थिरता को सीधे अमेरिकी मातृभूमि के लिए खतरा बताया जाने लगता है।

डॉनरो सिद्धांत में प्रयुक्त नैतिक भाषा का परिवर्तन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। शीत युद्ध के बाद के दौर में लोकतंत्र की स्थापना और मानवाधिकारों की रक्षा अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप की नैतिक आधारशिला हुआ करती थी। इस नए सिद्धांत में ये आदर्श धीरे-धीरे पीछे छूटते दिखाई देते हैं और उनकी जगह स्थिरता, पूर्वानुमेयता और नियंत्रण जैसे व्यावहारिक लक्ष्य ले लेते हैं। लोकतांत्रिक परिणामों को उनकी अंतर्निहित वैधता के कारण नहीं, बल्कि इस आधार पर महत्व दिया जाता है कि वे रणनीतिक हितों के अनुकूल हैं या नहीं। यह दृष्टिकोण उदार अंतरराष्ट्रीयतावाद के सार्वभौमिक दावों को कमजोर करता है और वैश्विक राजनीति में नैतिकता के चयनात्मक प्रयोग को उजागर करता है।

डॉनरो सिद्धांत के व्यावहारिक क्रियान्वयन के अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसका सबसे तात्कालिक प्रभाव प्रभाव क्षेत्रों की

अवधारणा का सामान्यीकरण है, जिसे लंबे समय से संप्रभु समानता के सिद्धांत के विपरीत माना जाता रहा है। यदि बड़ी शक्तियाँ अपने पड़ोस में विशेष अधिकारों पर जोर देने लगे, तो अंतरराष्ट्रीय कानून की संरचना हर जगह कमजोर होगी। छोटे और मध्यम देश, विशेषकर वे जिनका इतिहास बाहरी हस्तक्षेपों से भरा रहा है, ऐसे सिद्धांतों को कभी भी निष्कलुष या हितकारी नहीं मानेंगे। लैटिन अमेरिका में सैन्य हस्तक्षेप, सत्ता परिवर्तन और आर्थिक दबाव की स्मृतियाँ आज भी जीवित हैं और किसी भी नए संरक्षकत्व को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।

वैधता का प्रश्न यहाँ केन्द्रीय बन जाता है। बल, प्रतिबंध या राजनीतिक दबाव से आज्ञाकारिता तो हासिल की जा सकती है, लेकिन वास्तविक सहमति शायद ही कभी उत्पन्न होती है। बाहरी समर्थन के माध्यम से वैधता गढ़ने के प्रयास अक्सर उल्टे पड़ते हैं और साम्राज्यवाद की धारणा को और मजबूत करते हैं। इससे स्थानीय नेतृत्व की विश्वसनीयता भी कमजोर होती है, जिन्हें विदेशी शक्तियों का प्रतिनिधि समझ लिया जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि किसी एक क्षेत्र में बाहरी निगरानी और हस्तक्षेप को स्वीकार्य मान लिया गया, तो अन्य शक्तियों के लिए भी दुनिया के दूसरे हिस्सों में वैसा ही व्यवहार उचित ठहराना आसान हो जाएगा। इस तरह डॉनरो सिद्धांत की तर्कप्रणाली एक ऐसे विखंडित विश्व को जन्म दे सकती है जहाँ साझा नियमों के स्थान पर प्रतिस्पर्धी प्रभुत्व हावी हों।

भारत के लिए ऐसे सिद्धांतों का उभार एक जटिल दुविधा पैदा करता है। संप्रभुता और गैर-हस्तक्षेप भारतीय विदेश नीति के मूल स्तंभ रहे हैं, जो किसी भावुक आदर्शवाद से नहीं, बल्कि औपनिवेशिक अनुभवों से उपजे व्यावहारिक सबकों पर आधारित हैं। भारत की रणनीतिक संस्कृति हमेशा से बाहरी निगरानी में होने वाले सत्ता परिवर्तनों के प्रति सशक्त रही है, क्योंकि इतिहास बताता है कि बाहर से थोपी गई स्थिरता अक्सर दीर्घकालिक स्वायत्तता को कमजोर कर देती है। साथ ही, अमेरिका के साथ भारत की बढ़ती साझेदारी, विशेषकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और एशिया में शक्ति संतुलन जैसे क्षेत्रों में वास्तविक हित-साम्य को भी दर्शाती है।

इस संतुलन को साधने के लिए रणनीतिक परिपक्वता आवश्यक है। साझेदारी का अर्थ यह नहीं हो सकता कि भारत उन सिद्धांतों का बिना आलोचना समर्थन करे, जो उन्हीं मानकों को कमजोर करते हों जिन पर उसकी अपनी सुरक्षा और स्वतंत्रता टिकी है। रणनीतिक स्वायत्तता कोई अमूर्त नारा नहीं, बल्कि उस विश्व में एक अनिवार्य आवश्यकता है जहाँ शक्ति का प्रयोग संवाद से अधिक दबाव के माध्यम से होने लगा है। इसलिए भारत को अमेरिका के साथ सहयोग करते हुए भी स्वतंत्र विवेक बनाए रखना होगा, जहाँ हित मेल खाते हों वहाँ साथ चलना, और जहाँ सिद्धांतों पर आंच आती हो वहाँ संयमित असहमति प्रकट करना।

डॉनरो सिद्धांत वैश्विक राजनीति में भूमिका और पहचान से जुड़े गहरे प्रश्न भी उठाता है। एक उभरती महाशक्ति और वैश्विक दक्षिण की प्रमुख आवाज के रूप में भारत को यह तय करना होगा कि वह शक्ति और सिद्धांत के इस द्वंद्व में किस ओर खड़ा होगा। चुनौती यह है कि संप्रभुता और समानता की रक्षा करते हुए नैतिक उपदेशक बनने से बचा जाए, और राष्ट्रीय हित साधते हुए अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के प्रति उदासीनता न दिखाई जाए।

डॉनरो सिद्धांत एक ऐसे खतरनाक नए विश्व का प्रतीक है जहाँ शक्ति अधिक स्पष्ट और मानदंड कम प्रभावी हो गए हैं। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में मौन हमेशा कमजोरी का संकेत नहीं होता; कभी-कभी वह संतुलन और विवेक की रणनीति भी हो सकता है। लेकिन संयम का अर्थ निष्क्रियता नहीं होना चाहिए। बहुपक्षवाद, संप्रभुता के सम्मान और संरक्षकत्व की दीर्घकालिक लागतों पर शांत किंतु दृढ़ पुनर्संमरण आवश्यक है। इस अस्थिर वैश्विक परिदृश्य में शक्ति और सिद्धांत, साझेदारी और स्वायत्तता के बीच संतुलन बनाए रखना शायद सबसे कठिन, लेकिन सबसे आवश्यक कार्य है।



और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

दि न- 10 जनवरी, 2026। सायं 6.15, स्थान, बनारस और गंगा आरती।

यूँ अब साल में दो बार बनारस जाती हूँ और आपके समक्ष गुणगान गाती हूँ। बनारस है ही अभिभूत और मंत्रमुग्ध करने वाला शहर और गंगा आरती अद्भुत, मोहित करने वाला पल। हम भी डीजल बोट से (प्रदूषित करने हम भी भागीदार थे, चपू से खेनेवाली नावें जो नहीं मिली) गंगा आरती देखने चल पड़े। अचानक से दायें, बायें से दूँयों स्टीमर, छोटे क्लूज बोट्स काला धुँआ उड़ते हज़ारों की संख्या में जाने कहीं से उमड़ पड़े। हम काले, दम घोंटू धुयें में घिर गये। वैसे ही सर्दी थी। लोग अचानक खांसने लगे। हमने केवट से वापस चलने को कहा। लोग घाटों पर सर्दी भागों के लिये, मुँद के भस्म होने के लिये अग्नि प्रज्ज्वलित कर रहे। दीप आरती से पहले लोबान आरती हुई जो धुँआ-धुँआ थी। झोन आकाश में मंडा रहे थे। व्यवस्था की जाने कौन सी तस्वीर पहुँचा रहे थे? मायूस काली तस्वीरों को लिये हम अधूरी आरती से लौट चले। 30 साल से मेरे हृदय में बसी गंगा आरती की खुशबू डीजल से भर गई। घाटों की बीच आरती की लड़ई चल रही गंगा आरती की व्यवस्था बदल रही वो चित्रकार कहीं गया जिसने गंगा के ऊपर नीला आसमाँ रचा था उसकी बोलल में अब काला पेंट किसने भरा शायद चित्रकार भी मजबूर हो चला फिर भी पूछ आई गंगा से और क्या की रही है जिंदगी गंगा बदस्तूर बहती रही।

गंगा हुई मलिन

नील गगन श्याम हुआ सारा मंजर धुँआँ धुँआँ श्वेत पानी सियाह हुआ प्रदूषण ने गंगा को छुआ किसने माँ की आँखों में कालिख मली

बेबस गंगा: अपने हाथों ही हम अपनी गंगा गंवा रहे

शर्मिदा हो ऐ भागीरथी कहाँ चली ? स्टीमर, बोट्स दानव की तरह घुसे आ रहे संज्ञा आरती में दमघोंटू पवन, जलते नयन जहर फैला रहे संज्ञा आरती में जो वो थी कितने नाजों की पत्ती

यूँ शिव प्रिया अकेली हुई लो बनारस में ही गंगा हुगली हुई कहती, रोको मत, यहाँ अब मुझे लली शर्मिदा हो ऐ भोगवती कहाँ चली काशी की शान, ये गंगा तट महान 'नमामि गंगे' से भी मुसीबत ना टली

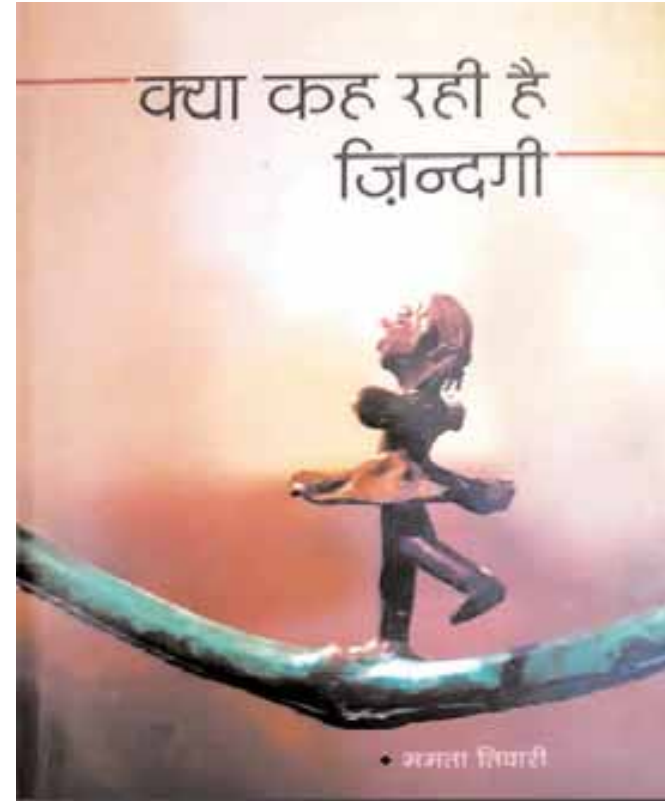
भली शर्मिदा हो हे नलिनो कहाँ चली? 'मलाइयो मिश्री' का अद्भुत स्वाद देवनादी को मीठा ना बना रहा तमाम खामियों के चलते, फिर भी गंगा का दिल अथाह बड़ा रहा गंदगी समेटे लहरों में वो चली शर्मिदा हो ऐ नदिनी कहाँ चली? जो हुआ उसमें हमारी भूल है देश विदेश में गंगा की मचती धूम है विदेशियों को कड़वा धुँआ बीमार कर चला

विश्व की नजरो में अभिमान गिर चला यूँ मानचित्र में हमारी सुसंस्कृत छवि ढली शर्मिदा हो ऐगेंजेस कहाँ चली ? अथाह जनसमूह आरती में उमड़ा आ रहा त्रिधामामिनी के सीने पे कौन बुलडोजर चला रहा

पहले ही हमारे पापों से छननी था हृदय अब ये प्रदूषण उसे भयावह बना रहा मानों मसल दी किसी ने नाजुक कली शर्मिदा हो ऐ स्वर्ण दी कहाँ चली ? 'बचा लो मुझे'

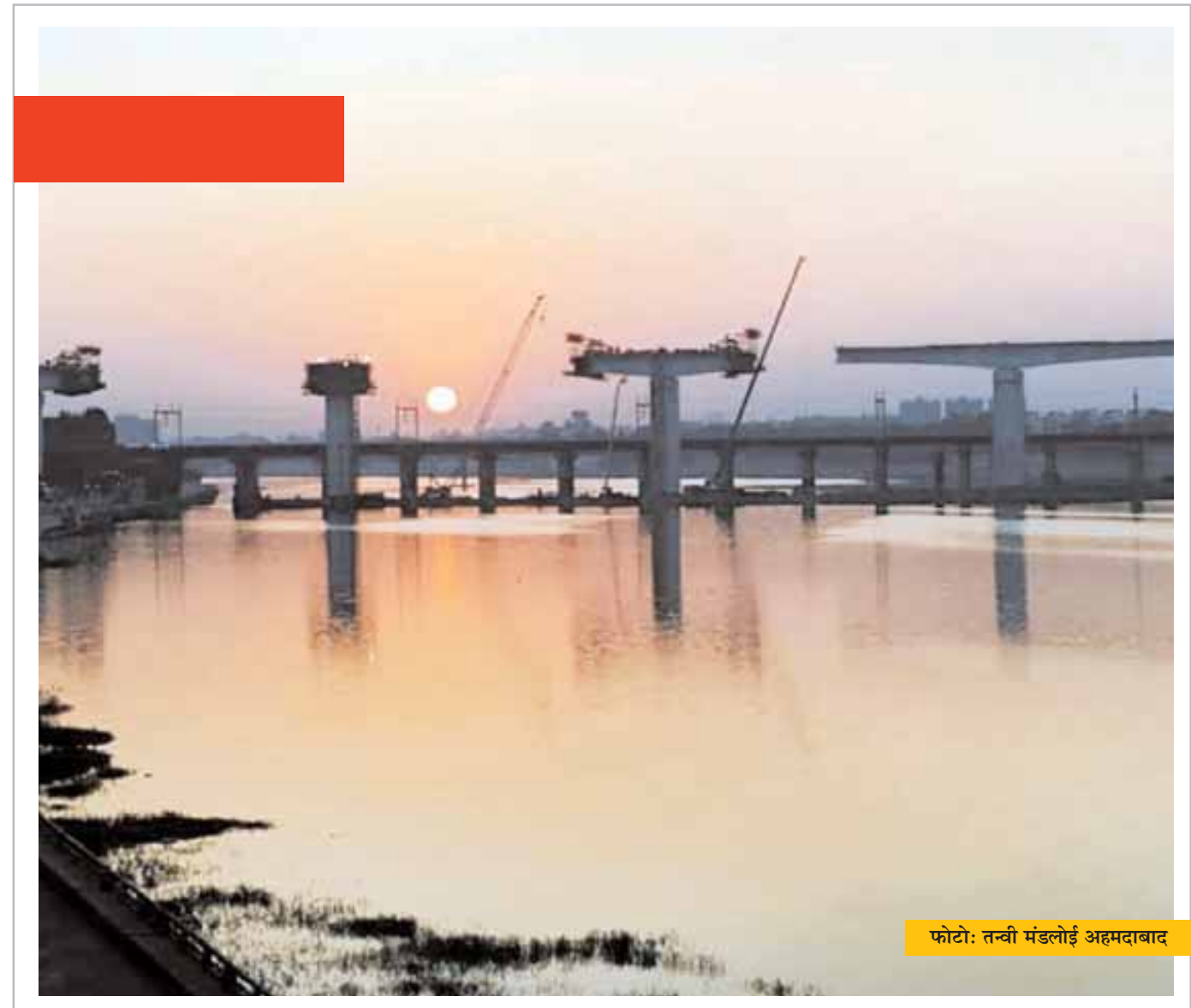
आह्वान माँ गंगा का है कीटाणु रहित पूजा योग्य अमृतजल गंगा का है नहीं व्यवस्था की झूठी बातें भली शर्मिदा हो ऐ विष्णुपदी कहाँ चली ? जो दे रही माँ पवित्र जल उसी की कोख में जहर मिला रहे अपने हाथों ही हम अपनी गंगा गंवा रहे

यही फुसफुसाहट है बनारस की गली गली शर्मिदा हो ऐ जाह्वी कहाँ चली? गंदगी समेटे लहरों में बेबस गंगा कराह रही कहती बदलो अपना रवैया अन्यथा मैं यहाँ से जा रही इस बार लगी मुझे उदास गंगा ढली ढली शर्मिदा हो ऐ मंदाकिनी कहाँ चली ? शर्मिदा हो ऐ गंगा कहाँ चली ?



शर्मिदा हो ऐ पद्मा कहाँ चली गंगा आरती को धूसरित किया सुविधा पाने को प्रदूषित किया गंगा का धवल श्वेत वस्त्र बनारस के धुयें में कलंकित किया संताप से उसकी कोरी चुनरी जली शर्मिदा हो ऐ मालती कहाँ चली? शिव जटा से प्रारंभ फनिल गंगा पाप लोगों के दिल में छुपाये

तमाम क्लेश हृदय में समेटे हलाहल पी शिव शंकर हो चली स्वच्छता से कहीं कचरा हुआ बली शर्मिदा हो ऐ त्रिदशेश्वरी कहाँ चली ? छोड़ दिया भी अब गंगा में डुबकी लगाना प्रण किया सीवेज पानी को 'पापहन्त्री' में मिलने से बचाना लगती नहीं उसे अब बनारस की गलियाँ



फोटो: तन्वी मंडलोई अहमदाबाद

दुनिया की बेरहमी को भेदती कोशिश...!



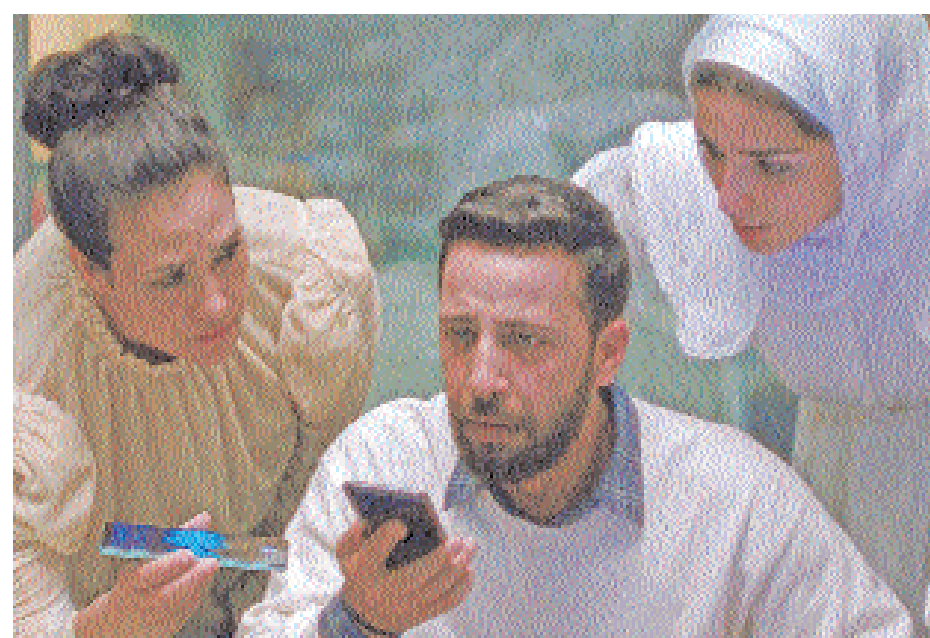
□ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

इस फिल्म की रिव्यू लगभग नामुमकिन है। गजा में पिछले नरसंहार के प्रोपेगैंडा और गलत जानकारी से भरी दुनिया में कौधर बेन हानिया की फिल्म पूरी इमानदारी से बात करती है। विषय अलग भी रखें तो यह फिल्म असल घटनाओं को सिनेमाई नजरिए से दिखाने का कमाल है, दिल पर असर करती है कि देखना जरूरी है।

'द वाइस ऑफ हिंद रजब' में छोटी-सी आवाज है, जो अकेली और खतरे में छोटी लड़की की है, डर और घबराहट से उसकी सांस तेज और फूली है, लेकिन यह फिल्म में साफ सुनाई देती है, क्योंकि आसपास की बचैन आवाजों के बीच इसे गाया नहीं

है। यह रजब के कहे आखिरी शब्दों की असल जिंदगी की रिकॉर्डिंग है, जो पांच साल की फलस्तीनी बच्ची थी और 29 जनवरी, 2024 को मारी गई थी, जब उसके परिवार की कार पर इजराइली सेना ने गजा पट्टी पर गोलाबारी की थी। आखिरी घंटों में लड़की ने बार-बार फोन किया और बचाव के लिए गुहार लगाई, जो कभी उस तक नहीं पहुँची।

गजा पर इजराइली बमबारी के दो बरसों में बीस हजार से ज्यादा फलस्तीनी बच्चे मारे गए। दस अक्टूबर को सीजफायर के बाद से बयासी और बच्चे मारे गए हैं। मरने वालों की तस्वीरें ऑनलाइन हैं। हिंद की तस्वीरें भी शामिल हैं, जिसमें वह गुलाबी रंग के कपड़े, फूलों वाला टियारा पहने या बड़ी एंकेडमिक कैप और गाउन में मुस्कुराती दिखाई देती हैं, लेकिन उनकी आवाज, मोत के बाद भी परेशान करती है। जब बेन हानिया ने हिंद की आवाज सुनी तो एयरपोर्ट टर्मिनल पर अचानक रुक गई, क्योंकि यात्री उसके चारों ओर जमा हो गए थे। यह बच्ची थी, जो फलस्तीन को नरसंहार से बचाने की अपील के बीच बड़ों से अपील कर रही थी और दोनों ही मामलों में दुनिया नाकाम रही थी। वे कहती हैं, 'जब मैंने उसकी आवाज सुनी तो उस पल ऐसा लगा जैसे मुझे



कह रही हो।' आखिरी मिनटों में बेन हानिया ने हिंद की माँ का इंटरव्यू शामिल किया है। यहां मरी लड़की की आवाज का इस्तेमाल असरदार रहा है। 'द वाइस ऑफ हिंद रजब' बहुत दर्दनाक है। फिल्म की कहानी इतनी भयानक है कि उसका सामना करना मुश्किल है, फिर भी हमें इसका गवाह बनने की मांग करते हैं।

फिल्म को वेनिस फिल्म फेस्टिवल ने चुना, जहां सितंबर 2025 में इसका प्रीमियर हुआ। इसे तेइस मिनट तक तालियाँ मिलीं, जो फेस्टिवल के इतिहास में सबसे लंबा था। यह और लंबा चल सकता था, लेकिन अगली फिल्म दिखाने के लिए सिनेमाघर को खाली करना पड़ा। बेन हानिया को अहसास हुआ कि दुनिया भर में फैली बेपरवाही को भेदने में कामयाब रही हैं।

कहती हैं- 'इतने बच्चे मारे गए हैं कि हम भूलने की बीमारी और सुन्न हुए जा रहे हैं। सिनेमा, साहित्य और कला चीजें बदल सकते हैं। एक समय ऐसा आता है, जब आप समझाना बंद कर देते हैं। अब यह महसूस करने की बात है कि किसी और की जगह पर होना कैसा होता है। यह अलग लेवल है और सिनेमा यह कर सकता है।'